चकमक

नवम्बर, 1999 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00

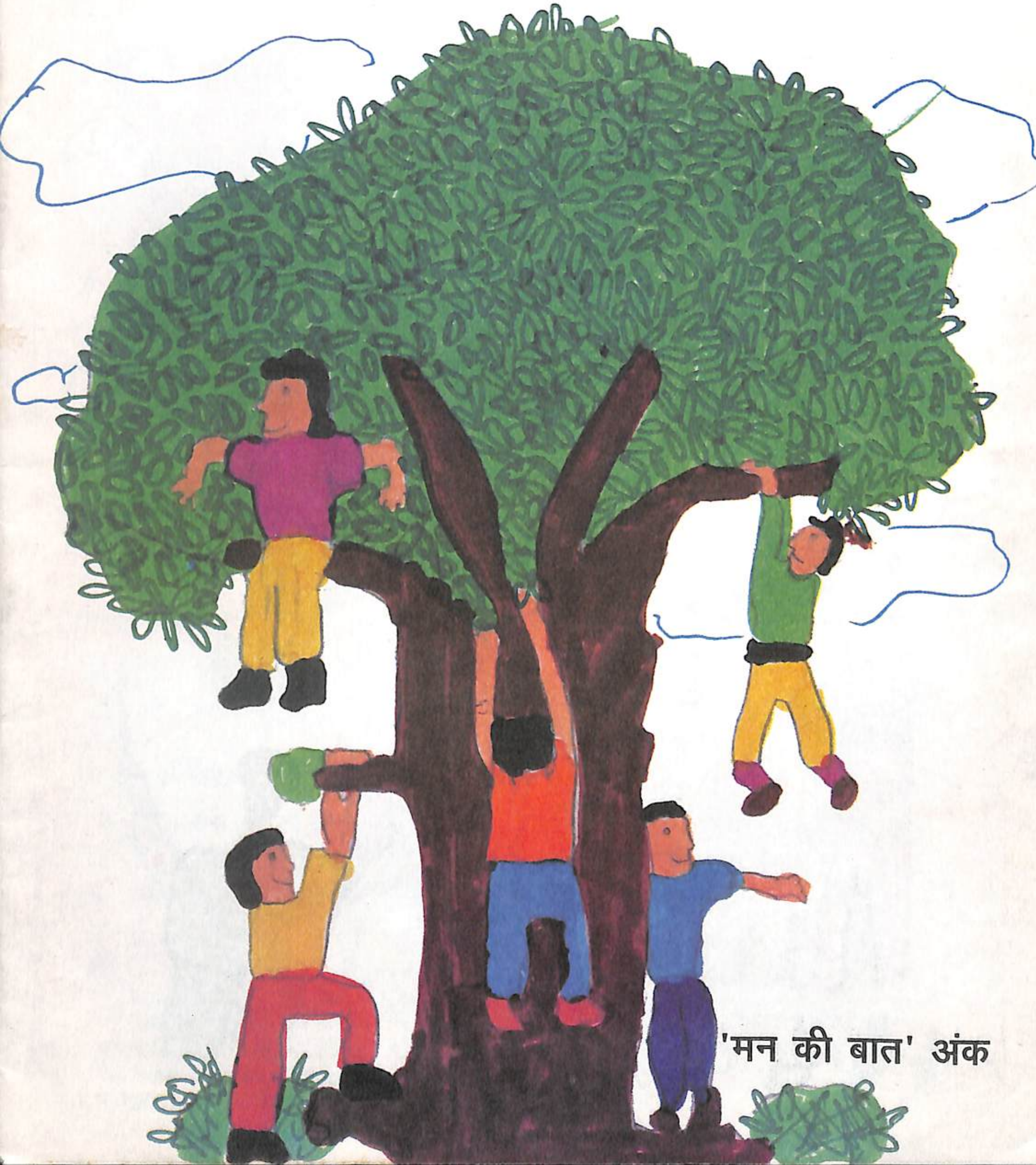

'मन की बात' अंक

अंकित शर्मा, उज्जैन, म.प्र.

सुखविन्दर स्वाति, तीसरी, देहरादून, उ.प्र.

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका
नवम्बर, 1999 के 170वें अंक में

बच्चों की पिटाई होना चाहिए या नहीं? और *तुम अपने स्कूल में क्या, किस तरह के बदलाव चाहते हो?* इनके बारे में कई पाठकों ने हमें अपनी राय लिखकर भेजी है। इस अंक में पढ़ो ऐसी ही मन की बातें। पृष्ठ 19 पर।

विभिन्न जीव-जन्तुओं की चलने की गति कितनी अलग-अलग है, इसकी जानकारी मिलेगी 'रफ़्तार' में पृष्ठ 16 पर।

मनभावन कविताएँ

3 जंगल में दीवाली
36 कितनी ठंडक

मेरा पन्ना

तुम्हारी अपनी कलम
और कूँची का कमाल
पृष्ठ 4 से 10 तक

रोचक श्रृंखला

14 आओ खेलें - गाएँ गीत - 8
32 हमारे शिक्षक - 14

हर बार की तरह

2 इस बार की बात
18 वर्ग पहेली
30 माथापच्ची

और भी बहुत कुछ

11 तुम भी बनाओ : पाचन-तंत्र
37 खेल खेल में : झूमर बनाओ
34 गणित के खेल
29 पहेलियाँ

आवरण : शान्तनु वर्मा, चौथी, भोपाल, म. प्र.

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

इस बार का अंक 'मेरा पन्ना' के अलावा तुम्हारे मन की ढेर सारी बातों से भी सजा है। जुलाई में हमने तुम्हें दो विषयों पर अपने मन की बात लिखने को कहा था। एक यह कि तुम्हारा स्कूल कैसा होना चाहिए और दूसरी बात थी पिटाई के बारे में।

बहुत सारे पाठकों ने इन दोनों विषयों पर अपने मन की बात लिखकर भेजी। उन्हें पढ़कर हमें जो दो बातें समझ में आईं उन्हें हम तुमसे और तुम्हारे मार्फत सब बड़ों से भी बाँटना चाहते हैं। पहली बात तो यह कि तुम लोग अपने स्कूल की बेहतरी, अपने भविष्य, अपनी पढ़ाई के बारे में उतना ही सोचते हो, चिंतित होते हो जितना कि बड़े। आमतौर पर बड़े यह सोचते हैं कि बच्चों की फ़िक्र उन्हीं को रहती है, खुद बच्चों को नहीं, है न? इसी सिलसिले में बचपन से चकमक पढ़ने वाली एक पाठक ने अपने स्कूल व कॉलेज के बहाने आज की शिक्षा की स्थिति का बहुत ही सटीक वर्णन किया है।

दूसरी बात है पिटाई के बारे में। तुम लोगों का मन कहता है कि जब-जब तुम्हारी पिटाई होती है तो तुम सिर्फ दुखी या गुस्सा होकर नहीं बैठ जाते हो। तुम यह भी सोचने की कोशिश करते हो कि तुम्हें मारा क्यों गया। तुम अपने माता-पिता के मन से, उनके नज़रिए से भी पिटाई की घटना के बारे में सोचने की कोशिश करते हो। यह बात बड़ों के लिए भी सीखने लायक है। बच्चों को किसी बात पर पीटने से पहले अगर इसी तरह से बड़े भी बच्चों के मन में झाँकें, उनको समझने की कोशिश करें तो शायद ऐसी नौबत ही न आए।

चलो, अब उम्मीद करें कि सबके मन में इस समझदारी का दिया जलेगा, रोशनी फैलेगी और पिटाई की जगह मिठाई मिलेगी।

● चकमक

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-15 अंक-5 नवम्बर, 1999

सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विस्वास

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम
अशोक रोकड़े

सहयोग
राकेश खत्री
सुशील शुक्ला

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

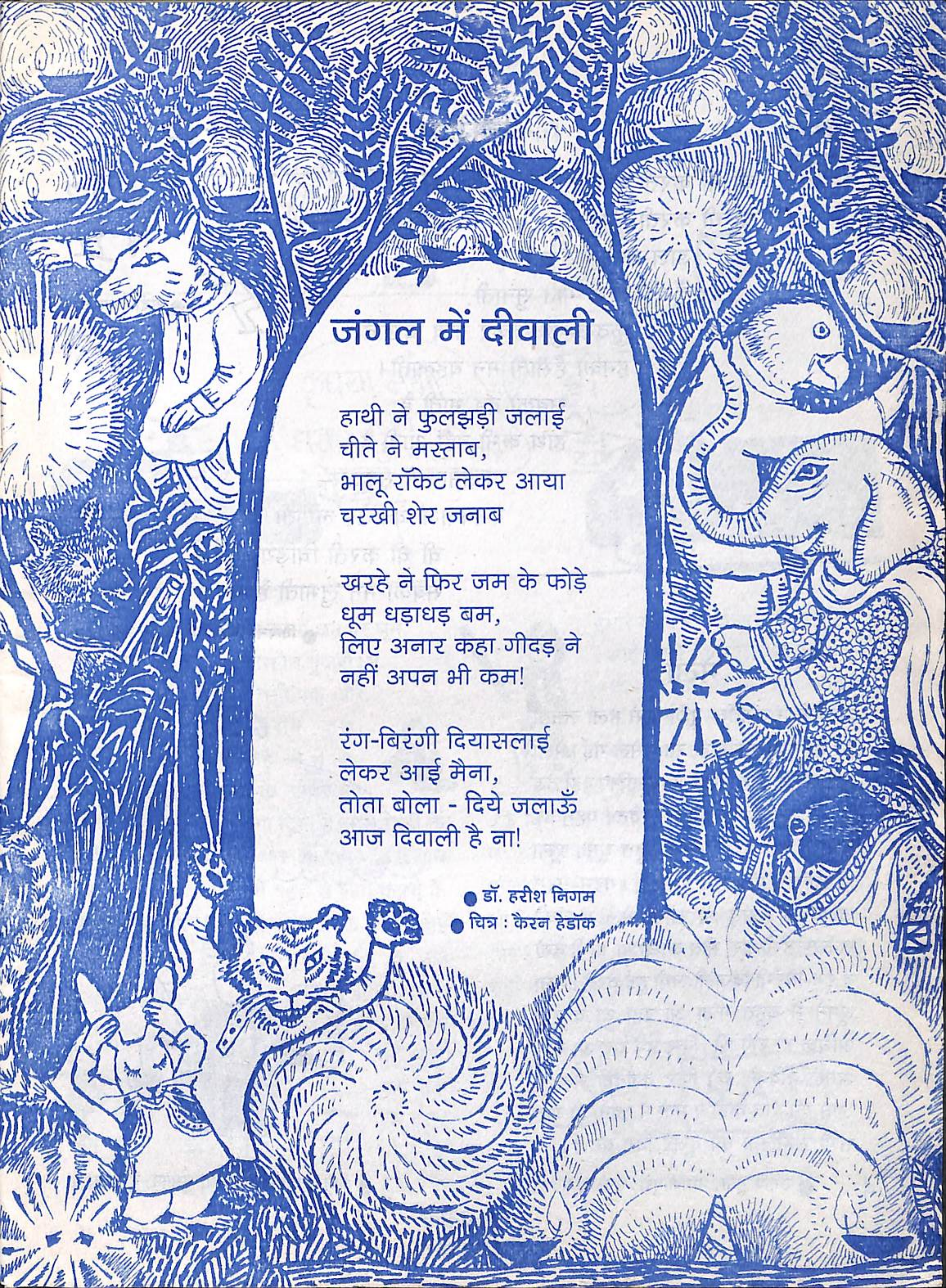

जंगल में दीवाली

हाथी ने फुलझड़ी जलाई
चीते ने मस्ताब,
भालू रॉकेट लेकर आया
चरखी शेर जनाब

खरहे ने फिर जम के फोड़े
धूम धड़ाधड़ बम,
लिए अनार कहा गीदड़ ने
नहीं अपन भी कम!

रंग-बिरंगी दियासलाई
लेकर आई मैना,
तोता बोला - दिये जलाऊँ
आज दिवाली है ना!

● डॉ. हरीश निगम
● चित्र : कैरन हेडॉक

चिड़िया

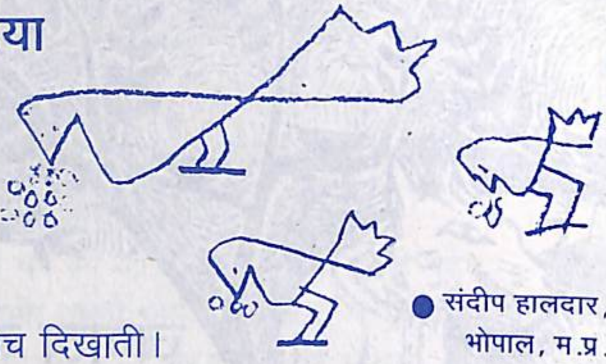

चीं चीं करती चिड़िया
चीं चीं करती चिड़िया
डाल-डाल पर जाती।
चूँ-चूँ करके गीत सुनाती,
फुदक-फुदककर नाच दिखाती।
हमको हँसाती मन बहलाती।
सबको वह भाती है,
हाथ कभी नहीं आती है।
आसमान में उड़कर,
कल्पनाओं का ढेर लगाती।
चीं चीं करती चिड़िया,
सबका मन लुभाती है।

● संदीप हालदार, भोपाल, म.प्र.

● किरन महता, बस्तर, म.प्र.

मेला

उज्जैन में कार्तिक पूर्णिमा से मेला लगता है। मैं मेरे मामाजी के साथ मेले गई। मेला नदी के किनारे लगता है। इसलिए वहाँ ठंड भी अधिक लगती है। हम स्वेटर पहनकर मेले में गए। वहाँ मेले में बहुत घूमे। झूला भी झूला व पॉपकॉर्न भी खाई। गरम-गरम जलेबी व गराडू भी खाए। मेले में डंकी सर्कस, हँसी घर, मौत का कुँआ, सभी देखे व रंग-बिरंगी बिजली लगी हुई देखी। मेला घूमने में बहुत मज़ा आ रहा था व रात अधिक हो रही थी। फिर हम घर आ गए। अगले रविवार को फिर कार्तिक मेले में जाने की बात कही व मेले में जाने की बात सभी सहेलियों को दूसरे दिन बताई।

● उर्वषि गुप्ता, भागसीपुरा, उज्जैन, म. प्र.

● अंशुमान शर्मा, तीसरी, धुमका, दुर्ग, म. प्र.

कर्फ्यू का अनुभव

दिनांक 30.6.1999 को मैं छत पर घूम रहा था। तभी 5–6 पुलिसवैन गुजरी। मैं तो देखता ही रह गया। तभी एक और पुलिस वैन गुजरी। उसमें कुछ पुलिसवाले बैठे थे। वे कह रहे थे कि कृपया सभी अपनी घरों के अन्दर हो जाएँ। शहर में कर्फ्यू लगा दिया है। उस गाड़ी के पीछे 10 फायर ब्रिगेड और आ रहीं थीं। मैं नीचे भाग गया। हमारे शहर में बहुत से लोग कर्फ्यू के बारे में नहीं जानते थे। तो वे समझे कि कर्फ्यू कोई वस्तु है। तो वे उसे देखने बाहर निकले पर उन्हें तो बस डंडे पड़े। यहाँ तक कि दूसरे गाँवों के लोग भी कर्फ्यू देखने आए पर उन्हें भी डंडे पड़े।

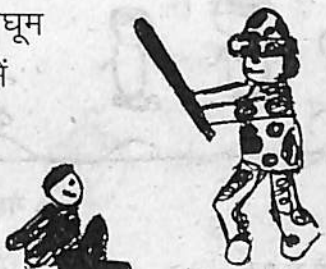

हमारे शहर में कई जगहों की पुलिस आई। मुझे तो बहुत डर लग रहा था। शादियों में तो आम आदमी की गाड़ियाँ सड़कों पर दौड़ती हैं पर आज तो पुलिस की गाड़ियाँ दौड़ रहीं थीं। हमारे यहाँ 20–25 दिन तक कर्फ्यू लगा रहा। कर्फ्यू लगा रहने के कारण हमारे स्कूल बन्द रहे। हमारे स्कूल में पुलिस ठहरी थी। इससे हमारी पढ़ाई पिछड़ गई थी। अब आप ही बताइए हम क्या करें? अभी तक हमारे स्कूल में पुलिस ठहरी है जो चुनाव तक ठहरेगी। बच्चे पुलिस से डरते हैं।

● चित्र एवं रचना : अनुज चौहान, टिमरनी, म.प्र.

दशहरे का पावन पर्व

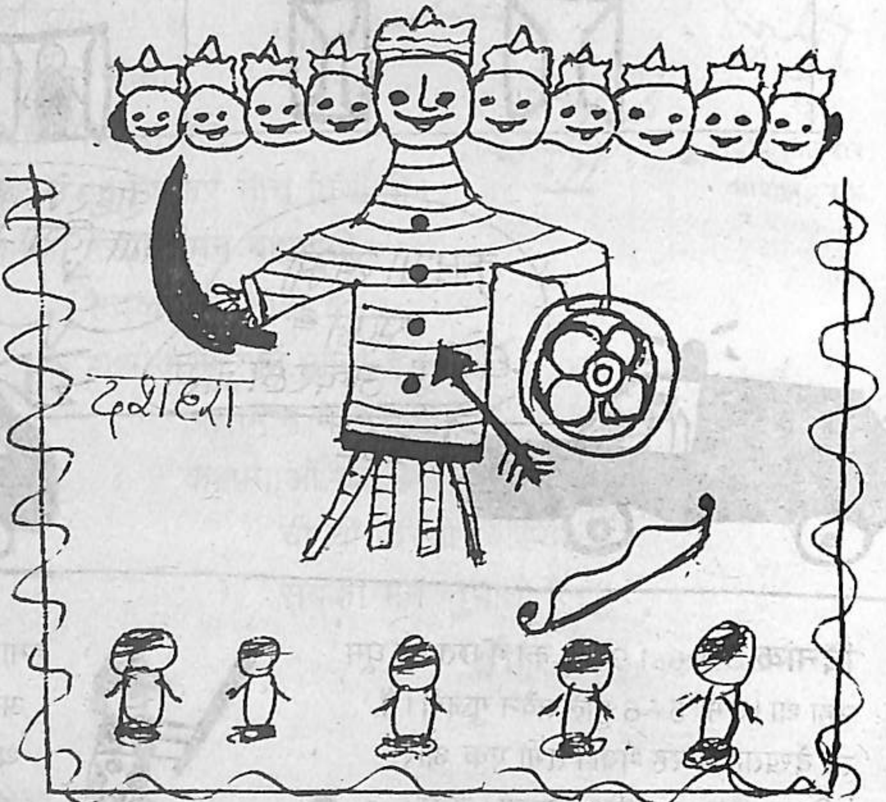

● नेहा गंजीर, पाँचवीं, पखांजूर, बस्तर, म. प्र.

मैं दशहरे के दिन कोरबा चला गया। मैं वहाँ के रावण को देखकर अचम्भे में पड़ गया। वहाँ रावण की आँख में बिजली रखी गई थी। रावण मशीन के माध्यम से बोल रहा था। कई लोग देखकर डर गए। रावण का हर अंग मशीन के माध्यम से चल रहा था। लोग समझते थे कि सच में यह मनुष्य की तरह चल रहा है। रावण को देखकर बहुत लोग भागकर घर आ गए। जब रावण जलाया गया, तो रावण हँसने लगा। उसमें इतने फटाखे रखे थे कि जब फटाखे फूटे तो मैंने कान बंद कर लिए। रावण के जल जाने के बाद वहाँ अनेक प्रकार के कार्यक्रम हुए। वहाँ इतनी भीड़ थी कि उसका बखान किया नहीं जा सकता।

हम लोग दोस्तों के साथ घूम रहे थे। मैं भीड़ के मारे बीच में छूट गया। मैं अकेला हो गया। तब मेरे साथियों को खोजते-खोजते रात दो बज गए फिर भी नहीं मिले और मुझे बहुत नींद आ रही थी। मैं एक होटल में चला गया और वहाँ सो गया। सुबह सोकर उठा तो इधर-उधर देखा तो वहाँ भी कोई दोस्त नहीं दिखा। तब जहाँ साइकिल रखी थी वहाँ गया। साइकिल कोई ले गया था। मैं रोते-रोते पैदल घर आया।

● भंवरसिंह भारद्वाज, कोरबा, म.प्र.

भारी बस्ता

मम्मी ज़रा सोचिए आप
नन्हें कन्धे भारी बस्ता
हालत हुई बहुत ही खस्ता।
पापा ज़रा दीजिए ध्यान
सहमे डरे क्लास में घुसते,
खुलकर नहीं कभी हम हँसते,
होमवर्क का भारी बोझ
होता नहीं हमसे रोज़।

● मृणाल जैन, अम्बाला केन्ट, पंजाब

मेरी गर्मियों की छुट्टियाँ

हमारी नौवीं की वार्षिक परीक्षा समाप्त हो जाने पर अप्रैल के महीने में हमारे विद्यालय की छुट्टियाँ प्रारंभ हुईं। मगर जैसी छुट्टियों के बारे में कल्पना की थी वैसा नहीं हुआ।

मैंने सोचा था कि दो माह की छुट्टियाँ लगेंगी और उन छुट्टियों में मैं अपने नाना-नानी के घर (मथुरा) जाकर मजे से रहूँगा। लेकिन सिर्फ मेरी कल्पना थी। यहाँ मेरे सोचने के विपरीत ही हुआ। छुट्टियाँ लगने पर दो-चार दिन की छुट्टियाँ मनाने के बाद ही मम्मी ने मुझे काम पर लगा दिया। पहले तो मैंने सोचा कि मम्मी ने यह मेरे साथ गलत किया। पर बाद में मैंने सोचा कि उन्होंने जो किया बिल्कुल सही किया, क्योंकि उस समय हमारे घर का खर्च कैसे चल रहा था ये तो हम ही जानते थे। फिर मैंने सोचा कि मेरी माँ यहाँ काम करे और मैं आराम करूँ, ये अच्छी बात नहीं। इसलिए मैंने हाँ कह दी और उस दिन से काम पर जाने लगा। फिर क्या था उस दिन से घर से दुकान और दुकान से घर।

हफ्ते में रविवार के दिन आधे दिन की छुट्टी मिलती थी। वह मैं अपने दोस्तों के संग खेल-कूदकर बिताता था। और कब आधा दिन गुजर गया पता ही नहीं चलता। दो महीने के बाद विद्यालय खुल गए हैं। इसलिए मैंने वह काम छोड़ दिया है। और स्कूल जाने लगा हूँ। ऐसे खत्म हुई हमारी वर्ष 99 की गर्मियों की छुट्टियाँ।

● अनिल चामड़िया, दसवीं, लश्कर, म. प्र.

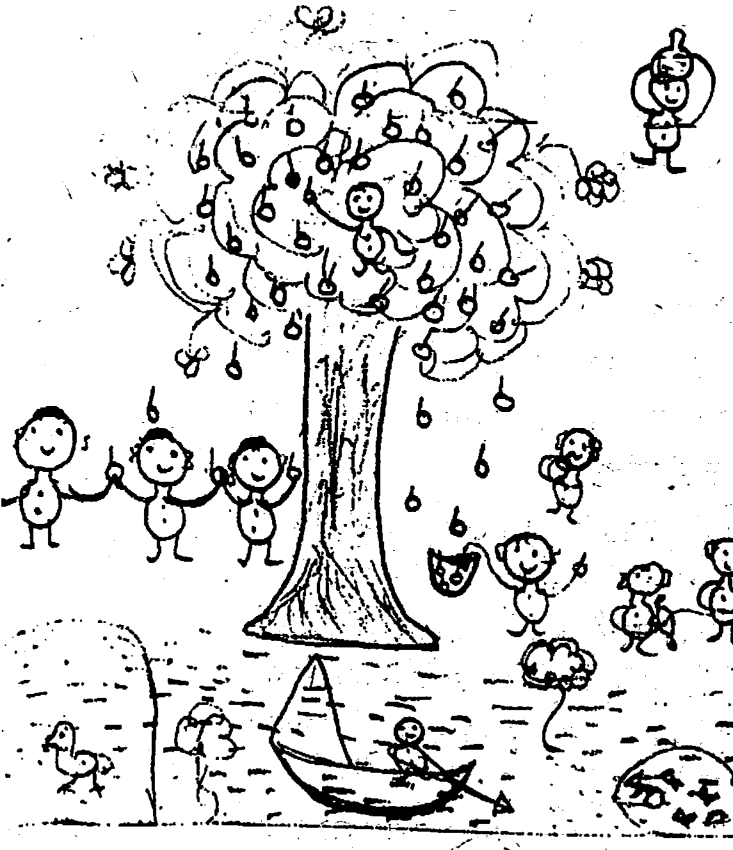
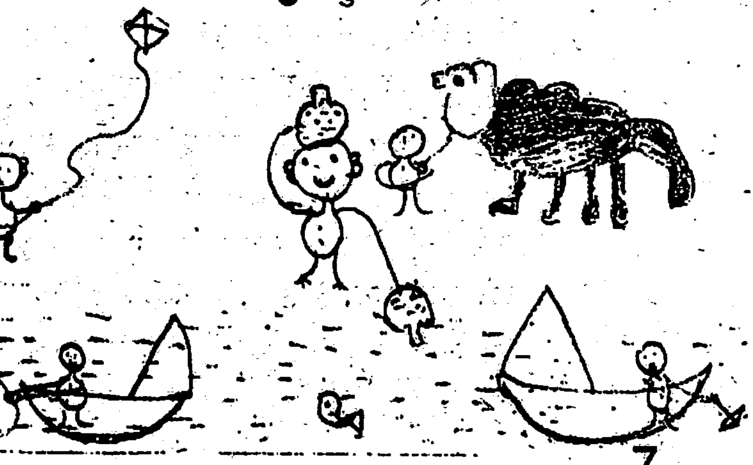

● अंशुल शर्मा, धार, म. प्र.

दीदी

कितनी अच्छी मेरी दीदी
मेरा मन बहलाती दीदी
खेल खेल में गिर जाऊँ तो
मेरा तन सहलाती दीदी

साथ में खाना खाती दीदी
पार्क मुझे ले जाती दीदी
रंग-बिरंगी देख तितलियाँ
मुझे बहुत ही भाती दीदी

● पूनम गुप्ता, पाँचवीं, शाहगढ़, सागर, म. प्र.

● पूर्वा वशिष्ठ, सातवीं, भोपाल, म. प्र.

हम और हमारे भाई-बहन

मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता। लेकिन मेरी नानी मुझे उठाती है तो मुझे अच्छा नहीं लगता। मुझे खेलना भी अच्छा लगता है। मुझे कोई गाली देता है तो मुझे गुस्सा चढ़ता है। लेकिन मैं लड़ाई नहीं करता। मेरे दोस्त कहते हैं कि चलो स्कूल से भाग चला जाए लेकिन मैं भागता नहीं हूँ। मैं कहता तुम भाग जाओ। मेरी मम्मी कहती है की खूब मेहनत से पढ़ा जाता है। ज्यादा घूमा नहीं जाता।

हम और हमारे भाई खूब लड़ाई करते हैं। मेरी मम्मी हम लोग को छुड़ाती है। मेरी मम्मी हमको बहुत मारती है। मेरी एक सबसे छोटी बहन है। मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ। मैं उसे मारता नहीं हूँ, जब वह गलती करती है तभी मारता हूँ। मैं किसी को गाली देता हूँ तो मेरी मम्मी बहुत मारती है। मेरी मम्मी मुझे जो काम करने को कहती है तो मैं कर देता हूँ। मेरे भैया कहते हैं कि हम लोग लड़ाई नहीं करेंगे, लेकिन लड़ाई कर लेते हैं।

● मनोज, गोरखपुर, उ. प्र.

मेरी पतंग

मेरे पास थी एक पतंग
चटक लाल था उसका रंग
उड़ती थी आसमान में
फर-फर-फर चिड़ियों के संग।

बहुत प्यार करता था उसको
दूर नहीं रखता था उसको
पतंग में एक था हाथी
वह भी मेरा था साथी

इक दिन कट गई मेरी पतंग
देखके रह गया मैं तो दंग
आई याद अब उसकी बातें?
खेलता था मैं उसके संग।

दूर गया अब मेरा साथी
वह पतंग और उसका हाथी
सोचता हूँ कोई ला दे वहाँ से
जहाँ गई है मेरी पतंग।

● मयंक कुलश्रेष्ठ, लश्कर, म. प्र.

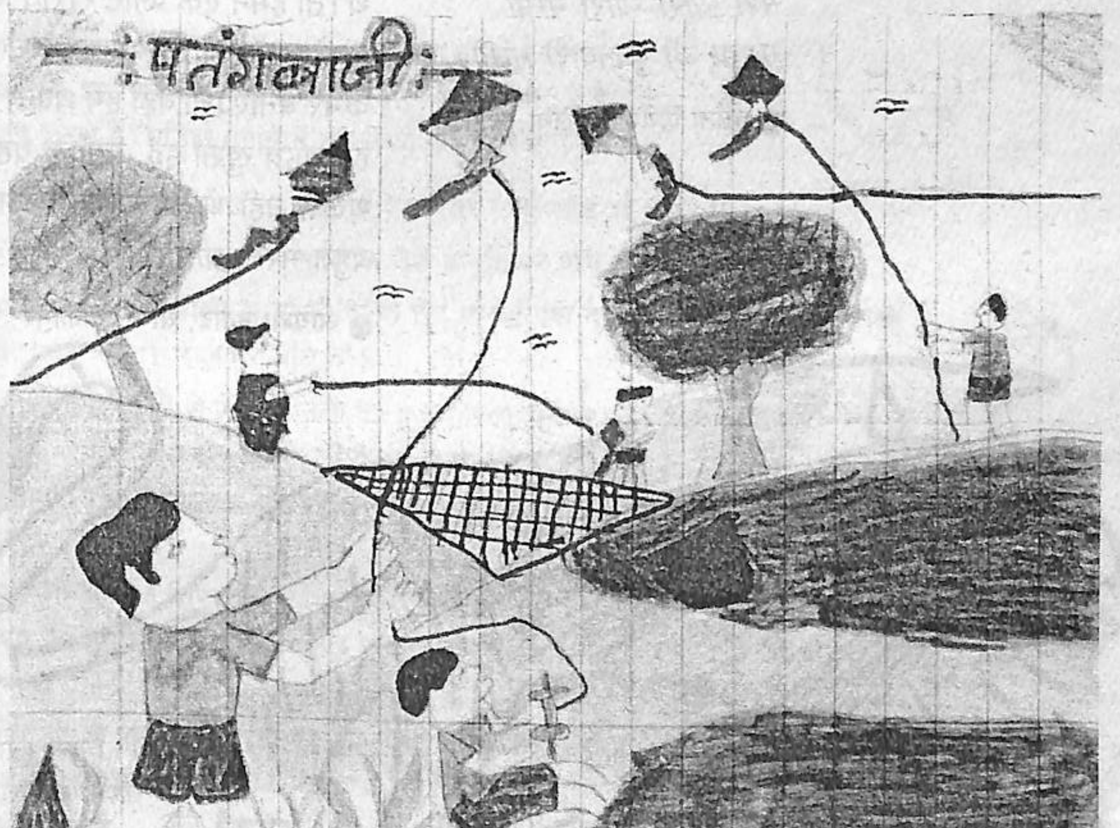

● मुकेश कुमार वैष्णव, आठवीं, मकरेड़ा, अजमेर, राजस्थान

जब मेरा सिर फूटा

हैण्डपंप चलाने में हत्था मेरे सिर में लगा तो खून से लथपथ हो गया और मैं सिर धोने लगा। मुझे उठाकर एक छोरा लाया। मेरे पापा-मम्मी मुझे देखकर घबरा गए। मैं खूब रोने लगा। मेरी मम्मी ने दूध पिलाया। फिर मुझे सुई लगवाई। डर के मारे मेरा गला सूख गया।

● पवन कुमार राठौर, कालीसिंध, म. प्र.

मेरी मम्मी

प्यारी-प्यारी मेरी मम्मी
जग से न्यारी मेरी मम्मी
जब मैं रूठ जाती हूँ
मुझको खूब मनाती है
टाफी बिस्कुट देकर मुझको
खूब प्यार जताती है
जब मैं सो जाती हूँ
मुझे उठाकर खाना खिलाती
लोरी गाकर मुझे सुलाती
परीलोक की कथा सुनाती
मेरी प्यारी-प्यारी मम्मी
ममता की फुलवारी मम्मी।

● नम्रता द्विवेदी, बलिया, उ.प्र.

बहुत थकते थे

हम पहले इन्दौर में रहते थे। तो वहाँ हम पाँचवीं मंजिल में रहते थे। तो वहाँ नल बहुत दूर था। तो हमारे पापा दो बाल्टी पानी भरकर ला देते थे। तो वह थक जाते थे। तो हम एक दिन खजराने गए थे तो वहाँ प्लाट कट रहे थे। तो हमने एक प्लाट खरीद लिया। हमने वहाँ मकान बनाया, बस आठ कमरे बनाए। तो वहाँ हम थकते नहीं। हमें बहुत खुशी हुई, क्योंकि वहाँ हम थकते नहीं थे और आठों कमरों में बहुत मस्ती करते थे।

● आयशा नवाब, चौथी, बाकानेर, म.प्र.

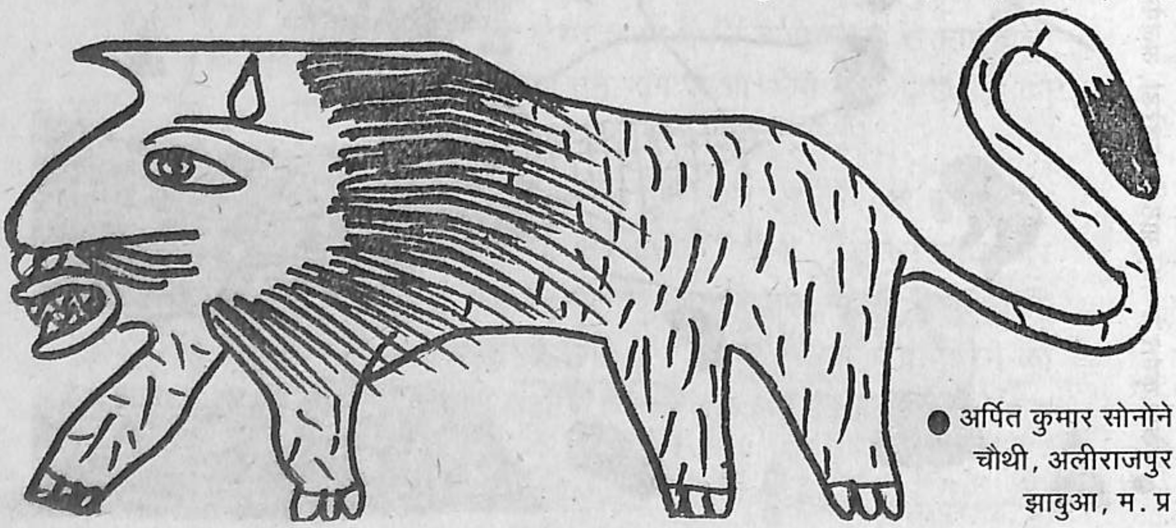

● अर्पित कुमार सोनोने, चौथी, अलीराजपुर, झाबुआ, म. प्र.

पाचन तंत्र का मॉडल

कल की ही बात है। एक क्रिकेट मैच में मैंने लगातार दस गेंदों पर दस छक्के उड़ाए।.... क्या कहा....। बात कुछ पची नहीं.....। कितना आसान है बातों का पचना या न पचना। लेकिन दूसरी तरफ हमारे पेट को खाना पचाने के लिए दुनिया भर के पापड़ बेलने पड़ते हैं। खाने को तो हमने खाया एक छोटा-सा लड्डू। लेकिन क्या तुम जानते हो कि उसको पचाने के लिए हमारे पूरे पाचन तंत्र को कितना काम करना पड़ता है?

देखने, सुनने, सोचने, सबके लिए हमें ऊर्जा चाहिए। यह हमें भोजन से मिलती है। भोजन को ऊर्जा में बदलने के लिए हमारा पाचन तंत्र कैसे काम करता है? तुम पाचन तंत्र का एक मॉडल बना सकते हो, जिससे तुम्हें इसकी मोटी-मोटी जानकारी मिल जाएगी।

सामग्री : इस मॉडल को बनाने के लिए हमें घर की कुछ फालतू, आसानी से मिलने वाली चीज़ों की ज़रूरत पड़ेगी, जैसे मज़बूत प्लास्टिक की दो थैलियाँ, बोतल, एक फ्यूज़ बल्ब, दो-तीन रबर नलियाँ, सायकिल ट्यूब, कुछ रबर और एक कीप।

पहले हम इन चीज़ों से पाचन तंत्र का मॉडल बनाते हैं। फिर यह भी देखेंगे कि इस पाचन तंत्र के कौन-कौन से अंग हैं और वे क्या-क्या काम करते हैं। मॉडल बनाने में तुम चित्रों की मदद लेते जाना।

1. सबसे पहले कीप की पीछे की नली में एक रबर नली जोड़ दो।
2. इस नली का दूसरा सिरा एक प्लास्टिक थैले के मुँह पर बाँध दो।
3. प्लास्टिक की इसी थैली के दूसरी तरफ छेद करके एक दूसरी रबर नली अन्दर डालकर बाँध दो।
4. इस प्लास्टिक थैली से निकली नली का कुछ हिस्सा बीच से घड़ी करके धागे से बाँध दो। बाँधते समय यह ध्यान रखना कि नली के दोनों सिरों के पास का कम से कम 8–10 सेंटीमीटर हिस्सा खुला रहे।
5. अब नली के खुले सिरे को सायकिल की रबर ट्यूब में फँसा दो। ट्यूब के अंतिम सिरे को एक और प्लास्टिक की थैली के मुँह में बाँध दो।
6. इस थैली के निचले सिरे को कपड़े सुखाने वाली चिमटी से बंद कर दो। यह पाचन तंत्र का अंतिम छोर, यानी मल द्वार या टट्टी का रास्ता है।

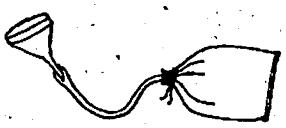

स्टेप -1 और 2

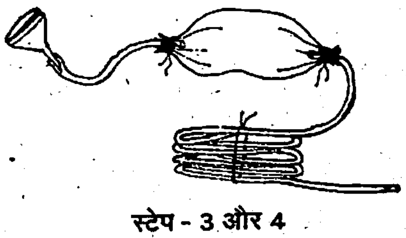

स्टेप - 3 और 4

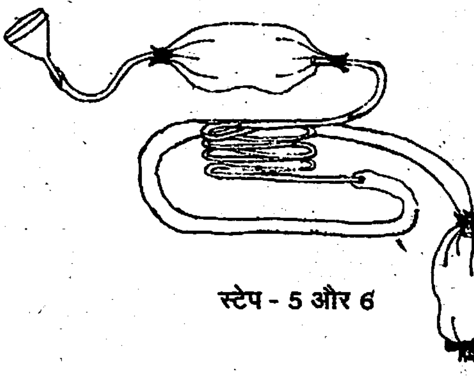

स्टेप - 5 और 6

7. अब पहली प्लास्टिक की थैली और घड़ी की हुई रबर ट्यूब के बीच इसी ट्यूब में एक छेद करके एक सीधी प्लास्टिक की नली या शरबत पीने वाला स्ट्रॉ फँसा दो।

8. स्ट्रॉ के दूसरे सिरे पर एक प्लास्टिक की बोतल लगा दो। बोतल लगाने के लिए टेप की मदद ले सकते हो।

9. फिर स्ट्रॉ के बीच एक छेद करके एक और छोटी रबर की नली फँसाओ।

10. रबर नली का दूसरा सिरा फ्यूज़ बल्ब के धातु वाले हिस्से से बाँध दो।

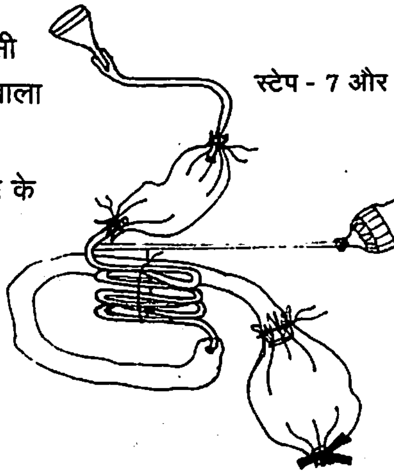

स्टेप - 7 और 8

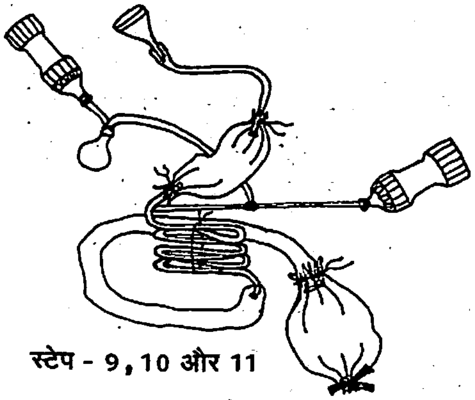

स्टेप - 9, 10 और 11

11. इसी के साथ बल्ब से एक और रबर की नली बाँधो तथा इसका दूसरा सिरा एक दूसरी प्लास्टिक बोतल के मुँह से बाँधो।

स्टेप - 12

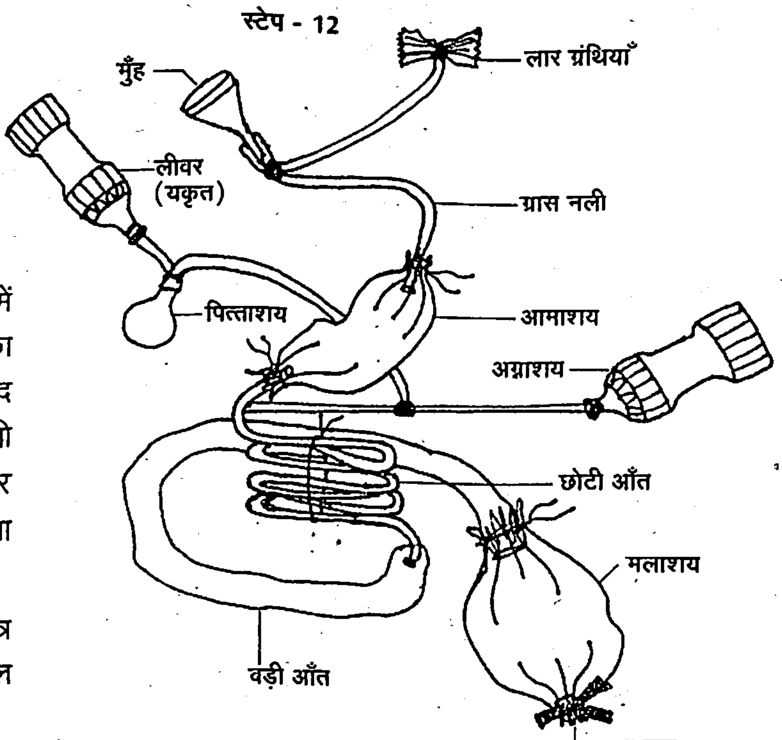

12. बस अब एक आख़िरी काम बचा है। शुरू में जो कीप लगाई थी (यानी इस पाचन तंत्र का मुँह) उसके नीचे लगी रबर नली में एक छेद करके एक और छोटी-सी रबर की नली फँसाओ। इस नली के अंत में एक कट लगाकर एक टॉफी के कागज़ को बीच से मोड़कर फँसा दो।

यह तैयार हो गया पाचन तंत्र का मॉडल! चित्र में सब अंगों के नाम दिए हैं। तुम भी अपने मॉडल में नामकरण कर दो।

अब यह देखते हैं कि इस पाचन तंत्र में कौन-कौन से अंग हैं तथा वह क्या-क्या काम करते हैं।

सबसे पहले खाने को मुँह में चबाकर उसका पेस्ट बनाते हैं। चबाते समय मुँह की लार ग्रंथियाँ लार निकालती हैं।

इस लार के दो फायदे होते हैं। एक तो खाना गीला और चिकना हो जाता है। दूसरा यह स्टार्च या शर्करा (कार्बोहाइड्रेट) को पचाने में मदद करती है। यानी मुँह से ही भोजन का पाचन शुरू हो जाता है।

मुँह के बाद ग्रास नली से भोजन आमाशय तक पहुँचता है। बहुत सारी माँसपेशियों से बनी इस नली में ऐसी व्यवस्था है जिससे यह लम्बाई में सिकुड़ती फैलती है। बिल्कुल वैसे ही जैसे तुम किसी गुब्बारे को दबाओ और छोड़ो। लेकिन गुब्बारे को तो तुम एक बार

में एक ही जगह से या अधिक से अधिक दो जगहों से दबा सकते हो। इस नली में व्यवस्था कुछ इस तरह की है कि एक जगह से नली दबती है तो दूसरी जगह से फूलती है। फिर उसके आगे नली दबती है और आगे फूलती है। इस तरह से एक लहर सी चलती है। नली के इसी लहरनुमा सिकुड़ने-फैलने से खाना मुँह से चलकर आमाशय तक पहुँचता है।

अब आता है आमाशय। यह पाचन तंत्र का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। आमाशय में एक ग्रंथि होती है जिसे गेस्ट्रिक ग्रंथि कहते हैं। यह पाचन के लिए ज़रूरी एंज़ाइम पेप्सिन, रेनिन और हाइड्रोक्लोरिक (नमक का) अम्ल आदि छोड़ती है। जानते हो....इन एंज़ाइमों से कौन-कौन सी चीज़ें पचती हैं? पेप्सिन से पाचन होता है प्रोटीन का, रेनिन से दूध वाले पदार्थों का और तीसरा हाइड्रोक्लोरिक अम्ल का काम बहुत ही महत्वपूर्ण है। एक तो यह एंज़ाइमों को सक्रिय होने में मदद करता है। दूसरा यदि खाने में कोई बैक्टीरिया आ जाएँ तो यह उन्हें मार देता है।

इसके अलावा पाचन तंत्र में दो आँतें होती हैं – एक छोटी आँत तथा दूसरी बड़ी आँत। यदि इनके आकार को देखें तो छोटी आँत लम्बाई में बड़ी आँत से बड़ी होती है। लेकिन मोटाई में यह बड़ी आँत से कम मोटी होती है। छोटी आँत में लीवर से एक द्रव आता है जिसे 'बाइल जूस' कहते हैं। गॉल ब्लेडर में लीवर से रिसकर बाइल जूस इकट्ठा होता है। यह बाइल जूस वसा या चिकने तैलीय पदार्थों को पचाने का काम करता है। छोटी आँत खुद भी कुछ द्रव निकालती है जैसे – लाइपेज़, लेक्टेज, मेल्टेज़। स्टार्च को तोड़ने का थोड़ा बहुत काम यहाँ भी होता है। एक बहुत ही रोचक बात यह है कि इस छोटी आँत में पाचन के अलावा पची हुई चीज़ों को शरीर द्वारा सोखने का काम भी होता है।

इसके बाद आती है बड़ी आँत। बड़ी आँत के द्वारा ही शरीर पानी व लवणों को सोखता है।

अग्नाशय (पेंक्रियाज़) भी में कई पाचक रस होते हैं जो मुख्यत: प्रोटीन को पचाने में मदद करते हैं।

तो ये रही पाचन तंत्र के अंगों की मोटी-मोटी जानकारी।...पची या नहीं। अच्छा जो बातें नहीं पची हों, हमें लिखना।

नेशनल बुक ट्रस्ट का आयोजन

भोपाल पुस्तक मेला

दिनाँक : **14 से 23 नवम्बर 1999**

स्थान : **दशहरा मैदान, टी. टी. नगर, भोपाल**

पुस्तक मेले में **एकलव्य** के प्रकाशन लेकर हम भी आएँगे,
आप भी ज़रूर आइए पुस्तकों का मेला देखने।
साथ ही होगा बच्चों का जमावड़ा,
बहुत सारे खेल खेलेंगे
पुस्तक मेले में।

एक सहेली बाग में

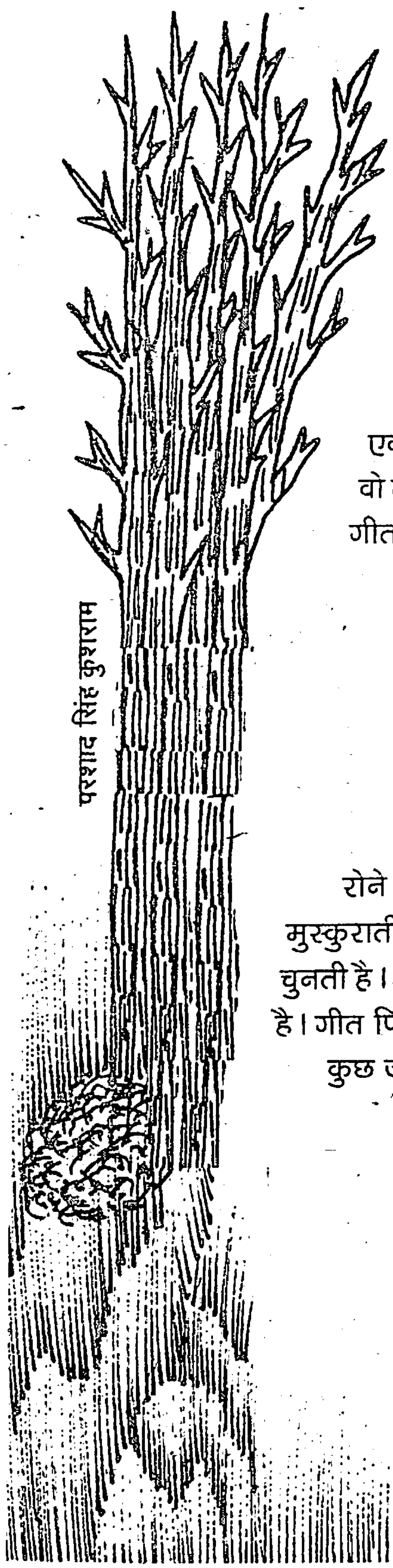

परशाद सिंह कुशराम

यह एक बहुत लोकप्रिय खेल है - सहेली के बाग में रोने, फिर चुप होकर अपनी सहेली को खोजने के बारे में। बच्चे इसको इतने उत्साह से गाते और खेलते हैं कि देखते ही बनता है। यह खेल बच्चों को साथ मिलकर लय में गाना भी सिखाता है। साथ ही अभिनय से परिचय भी कराता है। खेल कुछ इस तरह है -

कुछ लड़के या लड़कियाँ (या दोनों मिलकर) एक घेरा बनाते हैं और एक लड़की या लड़का घेरे के बीच में बैठता है। घेरे के अन्दर बैठा हुआ वो लड़का या लड़की रोने का अभिनय (ऐक्टिंग) करती है। सारे बच्चे यह गीत गाने लगते हैं -

एक सहेली बाग में,
बैठी बैठी रो रही।
उठो सहेली उठो,
अपने आँसू पोंछ लो।
पूरब पश्चिम घूम लो,
अपनी सहेली खोज लो।

रोने वाली लड़की गाने के साथ-साथ खड़ी होती है, आँसू पोंछकर मुस्कुराती है। चारों दिशाएँ घूमकर घेरे में खड़े खिलाड़ियों में से किसी एक को चुनती है। अब चुने हुए खिलाड़ी को घेरे में बैठकर रोने का अभिनय करना होता है। गीत फिर से शुरू होता है। और इस तरह खेल चलता रहता है।

कुछ जगहों पर इस खेल में गीत को अलग तरीके से भी गाया जाता है -

एक सहेली बाग में,
बैठी बैठी रो रही।
उसका साथी कोई नहीं
उठो सबेरा हो गया
अपने आँसू पोंछ लो।
चारों चक्कर घूम लो,
अपना साथी ढूँढ लो।

यह खेल एक-दूसरे तरीके से भी खेला जाता है। इसमें रोने का अभिनय करनेवाला खिलाड़ी अपनी आँखें भी बन्द रखता है। आँख बन्द करके ही वह अपने साथी को खोजने की कोशिश भी करता है। अन्य साथी उसकी पकड़ में आने से बचने की कोशिश करते हैं। जो पकड़ा जाता है, अगली बार वह घेरे में बैठकर रोने का अभिनय करता है।

चोर-सिपाही

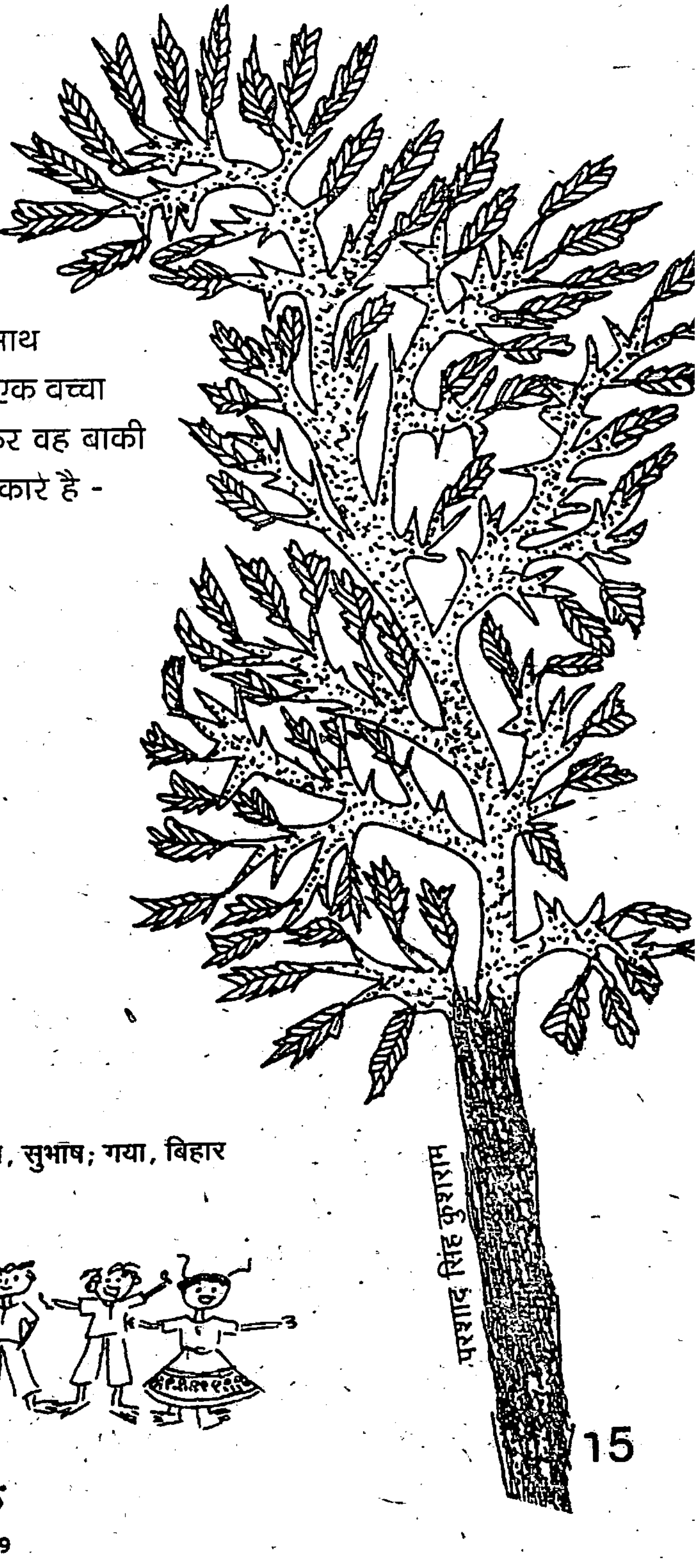

छिया-छाई के खेल के लिए एक को 'चोर' बनाने के लिए बाकी बच्चों में से चोर का चुनाव गीत गाकर करते हैं। बच्चे घेरा बनाकर खड़े होते हैं। एक बच्चा गीत गाता है और हर शब्द के साथ अपना हाथ एक-एक कर सभी बच्चों पर ले जाता है। गीत का अंतिम शब्द जिस बच्चे पर आता है वह अलग हो जाता है। अब यही क्रिया बाकी के साथ दोहराई जाती है। इस तरह हर बार गीत खत्म होने पर एक बच्चा अलग हो जाता है। अंत में जो बच गया वह 'चोर'। फिर वह बाकी साथियों को पकड़ने की कोशिश करता है। गीत इस प्रकार है -

नदी किनारे टुकड़ी थी
उसमें शबाना खेलती थी
खेलते-खेलते भूख लगी
शबाना एक तारिक तोड़ दी
राजा का बेटा देख लिया
फुलझड़ी से मार दिया
बबलू भैया आइए
दो रसगुल्ले लाइए
मेरी शबाना नाचेगी,
छम, छम, छम

इस खेल में कई अलग-अलग गीत भी गाए जाते हैं। तुम कौन-सा गीत गाते हो? लिखना।

प्रस्तुति : अबशार, नाहिद, ज़हीन, सुभाष; गया, बिहार

यह चित्र : 'समझ के लिए तैयारी' से साभार

किसकी रफ्तार कितनी

तुम अपने घर से स्कूल या स्कूल से घर कितनी देर में पहुँच जाते हो? इस सवाल का उत्तर दो बातों पर मुख्य रूप से निर्भर होगा। पहली तो यह कि तुम्हारे घर से स्कूल तक की दूरी कितनी है, और दूसरी यह कि तुम्हारी चलने की रफ़्तार कितनी है।

तुम्हारी रफ्तार से । मतलब कि तुम एक निश्चित समय में कितनी दूरी तय करते हो। जैसे तुम एक घण्टे में कितने किलोमीटर चल सकते हो। यह तो हुई तुम्हारी चलने की रफ़्तार। और एक घण्टे में कितने किलोमीटर दौड़ कर पहुँच सकते हो यह हुई तुम्हारी दौड़ने की रफ़्तार।

गाड़ियों की रफ़्तार तो मशीन से तय होती है। आजकल तेज़ रफ़्तार से चलने वाली गाड़ियाँ बहुत दौड़ती-भागती दिखाई देती हैं। चलो देखते हैं कि प्राणियों में किसकी रफ़्तार कितनी है। कौन किससे तेज भागता है।

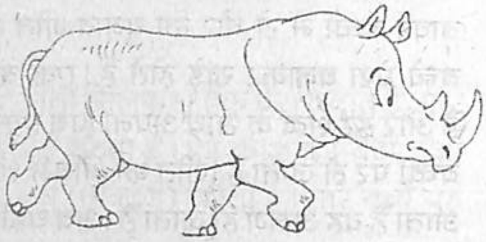

गैंडा – 45 किलोमीटर प्रति घण्टा

बिल्ली – 47 किलोमीटर प्रति घण्टा

चमगादड़ – 24 किलोमीटर प्रति घण्टा

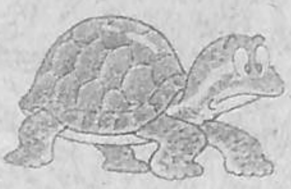

कछुआ – 3 किलोमीटर प्रति घण्टा

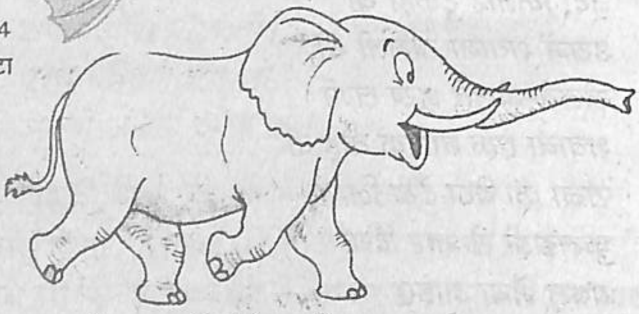

हाथी – 39 किलोमीटर प्रति घण्टा

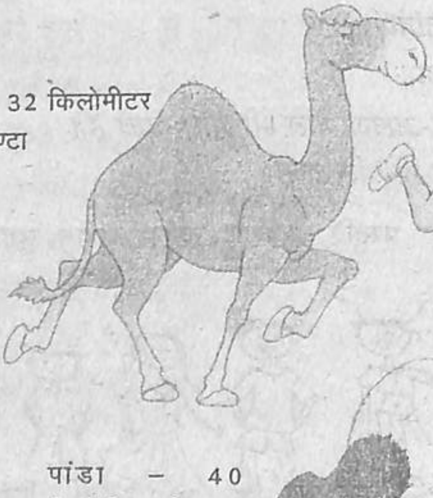

ऊँट – 32 किलोमीटर प्रति घण्टा

चूहा – 10 किलोमीटर प्रतिघण्टा

तेज़ दौड़ने वाला आदमी – 40 किलोमीटर प्रति घण्टा

सूअर – 17 किलोमीटर प्रति घण्टा

पांडा – 40 किलोमीटर प्रति घण्टा

भेड़िया – 72 किलोमीटर प्रति घण्टा

कुत्ता – 67 किलोमीटर प्रति घण्टा

हिरण – 97 किलोमीटर प्रति घण्टा

कंगारू – 72 किलोमीटर प्रति घण्टा

चीता – 113 किलोमीटर प्रति घण्टा

लोमड़ी – 72 किलोमीटर प्रति घण्टा

खरगोश – 72 किलोमीटर प्रति घण्टा

घोड़ा – 77 किलोमीटर प्रति घण्टा

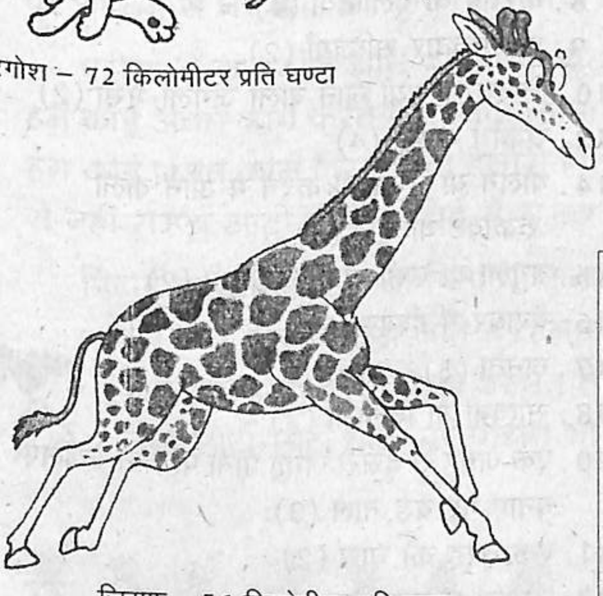

जिराफ़ – 56 किलोमीटर प्रति घण्टा

पूरी रफ़्तार से दौड़ने वाले व्यक्ति 40 किलोमीटर प्रति घण्टे की औसत रफ़्तार से दौड़ सकते हैं। अब तुम बताना हमें कि तुम कितने किलोमीटर प्रति घण्टा की रफ़्तार से दौड़ सकते हो। यह भी कि तुम्हारा स्कूल घर से कितनी दूर है और तुम दौड़कर जाने पर कितनी देर मे स्कूल पहुँचते हो?

वर्ग पहेली - 100

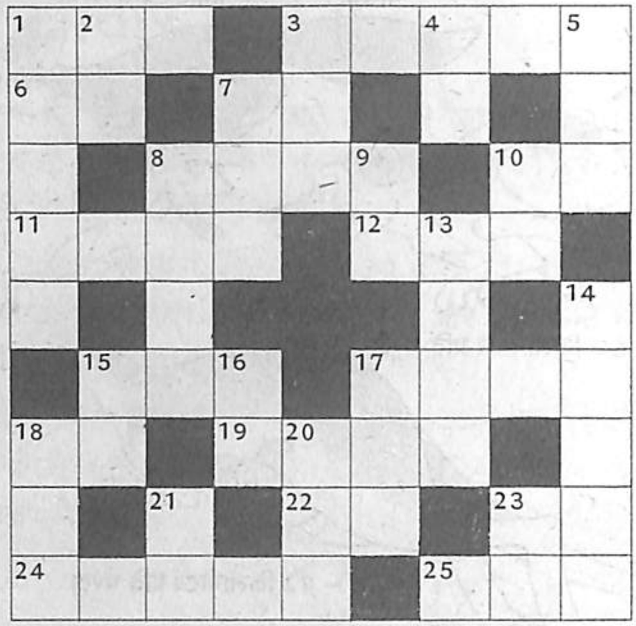

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. दिये-बाती और पटाखों का त्यौहार (3)
3. नतीजे में यह मिला (5)
6. बाद या पहले में है उलटी स्मृति (2)
7. सलवार-कमीज़ में ढूँढो कपड़े में पड़ने वाली झुर्रियाँ (2)
8. ठहाके में चन्द्रबिन्दु की कमी है (4)
10. मायावी है रात (2)
11. लाला इला जला – जिस रोग का उपचार सम्भव न हो (4)
12. किसी चीज़ की इच्छा या किसी बात की टीस (3)
15. मंत्री (3)
17. अचकन में मात्रा की कमी है, सहसा (4)
18. बड़ा ढोल (2)
19. कोई सामान तैयार करवाना (4)
22. उलटे महक में आप और ..... (2)
23. दुख भरी ठण्डी साँस (2)
24. जो हमेशा हरा-भरा रहे (5)
25. माथा या कपाल (3)

वर्ग पहेली - 100 का हल चकमक के जनवरी, 2000 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का जनवरी 2000 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

संकेत : ऊपर से नीचे

1. प्रयास के बाद दिलाई माचिस (5)
2. कहना, बोलना या कही हुई बात (2)
3. आसमान (3)
4. संगीत में स रे ग म....., भाषा में अ आ इ ई (2)
5. उत्तर व दक्षिण अमरीका को काटने और भूमध्य व प्रशांत महासागरों को जोड़ने वाली नहर (3)
7. आसान या स्वाभाविक (3)
8. करतब या गुलाटियाँ (4)
9. हरी पत्तेदार सब्ज़ियाँ (2)
10. तिब्बत में पाया जाने वाला जंगली भैंसा (2)
13. संकोच करना (4)
14. बोलने या उच्चारण करने में आने वाली रुकावट या त्रुटि (5)
15. बगुला या उसी जाति का पक्षी (2)
16. बराबर में ईश्वर (2)
17. जनता (3)
18. सांत्वना या दिलासा (3)
20. एक जगह से दूसरी जगह पानी पहुँचाने के लिए बनाए गए बड़े नाले (3)
21. एक तरह की घास (2)
23. दीवाल में ताक (2)

तुम्हारे मन की बातें

चकमक के जुलाई अंक में तुम्हें अपनी 'मन की बात' लिखने को कहा गया था। बहुत सारी 'मन की बातें' हमें मिलीं। सब तो नहीं पर उनमें से कुछ यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

हाँ एक बात हम भी अपने 'मन' की बता दें। यहाँ जो 'बातें' छपी हैं वो जिसने लिखी है उसके 'मन की' है। ज़रूरी नहीं कि वो चकमक के 'मन की भी' हो। चूँकि इस बार मामला मन की बातें लिखने का था, सो हमने तुम्हारी बातों को तुम्हारा ही रहने दिया, अपना कुछ भी नहीं जोड़ा।

तुम पढ़ो और सोचो, तुम्हारे मन की बात किसके मन की बात से मिलती है और किससे नहीं मिलती।

न प्यार ज्यादा न पिटाई

घर पर पिटाई होने पर हम बेहद दुख का अनुभव करते हैं। परन्तु सचमुच पिटाई से हमें गलती को फिर से न दोहराने की सीख भी मिलती है। उदाहरण के लिए घर में हम माता-पिता की बात न मानने पर, उनके द्वारा बताए गए काम न करने पर या उनका अनादर करने पर पिटते हैं। उसी प्रकार स्कूल में मैडम के पढ़ाते समय बातें करने से, उनकी बात ध्यान से न सुनने पर, गृहकार्य समय पर या ढंग से न करने से, कॉपी समय पर चेक न करवाने पर डाँट या मार पड़ती है।

परीक्षा में कम अंक आने पर अथवा झूठ बोलने पर भी घर या स्कूल में मार पड़ती है। यदि हम कोई अच्छा कार्य करते हैं तो माता-पिता हमें प्यार करते हैं और शाबाशी देते हैं। उसी प्रकार हम कोई गलत काम करते हैं तो हमारी पिटाई होती है। कई बार जो बातें हमें प्यार से या डाँट से नहीं समझ आती हैं, वो पिटाई से समझ आ जाती हैं।

पिटाई का अधिकार माता-पिता या अन्य बड़ों को होना ही चाहिए। यदि हमें पीटा न जाए तो हम गंदी आदतें सीख जाते हैं। हमारी गंदी आदतों की वजह से हमारा बहुत नुकसान होता है। बच्चों को जरूरत से ज़्यादा प्यार भी नहीं करना चाहिए और उन्हें छोटी-छोटी बातों पर पीटना भी नहीं चाहिए।

● पूर्वा वशिष्ठ, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

मौका नहीं मिलता

मैं कक्षा दसवीं की छात्रा हूँ। वैसे तो मेरा स्कूल अच्छा है और पढ़ाई भी ठीक होती है। लेकिन फिर भी मैं अपने स्कूल में कुछ बदलाव चाहती हूँ। मेरे स्कूल में पुस्तकालय की व्यवस्था नहीं है। जिससे अच्छी किताबें पढ़ने का मौका नहीं मिलता है। हमारे स्कूल के शिक्षक कक्षाओं में देर से आते हैं। लेकिन उनके पढ़ाने का तरीका बहुत अच्छा है। अगर कुछ समझ में नहीं आता है तो दोबारा से समझाते हैं।

हमारे स्कूल में पढ़ाई के साथ-साथ खेल तो होते हैं लेकिन चित्रकला, निबंध, कविताएँ, कहानी आदि की प्रतियोगिता भी होनी चाहिए।

सप्ताह में एक दिन में आधा घण्टे बालसभा होना चाहिए। राष्ट्रीय त्यौहारों जैसे 26 जनवरी, 15 अगस्त के अवसर पर कार्यक्रमों में भाग लेने वाले बच्चों के साथ पक्षपात किया जाता है। जिससे प्रतिभावान बच्चों को राष्ट्रगीत, भाषण, लोकगीत आदि कार्यक्रम प्रस्तुत करने का मौका नहीं मिलता।

प्रतिभावान विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

● रितु चौबे, भोपाल, म.प्र.

कितनी चिंता

घर में जब पिटाई हुई तो बहुत बुरा अनुभव किया। पिटाई का मात्र एक कारण है खेल, वो भी क्रिकेट।

लेकिन पापा, दादाजी को यह खेल पसंद नहीं है। इसका कारण यह है कि उन्हें डर रहता है कि कहीं चोट न लग जाए। वो चाहते हैं कि हम सिर्फ घर पर रहें। हम तो बस चोरी छुपे क्रिकेट खेलने निकल जाते हैं। और जब पापा को मालूम पड़ जाता है कि क्रिकेट खेलने गए थे तो, बस पिटाई शुरू हो जाती है।

माता-पिता कभी अपने बच्चों का बुरा नहीं सोचते। वे पिटाई कर यह जताना चाहते हैं कि उनको हमारी कितनी चिंता है। पिटाई करने के अधिकार के बारे में मैं यह कहूँगा कि माता-पिता या अन्य बड़ों को पिटाई करने का पूरा अधिकार है। लेकिन माता-पिता को बच्चों की भावनाओं की भी कद्र करनी चाहिए। आप चकमक के माध्यम से मेरे पापा को समझाने का प्रयास करेंगे।

● राकेश गुप्ता, मंदसौर, म.प्र.

प्यार से सिखाया जाए

मेरा मानना है कि स्कूल में कुल मिलाकर अधिकतम सुविधाएँ होनी चाहिए। जैसे स्कूल में लड़कों के बैठने के लिए स्टूल-टेबल की व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे लड़कों की लेखनी अच्छी निकले। विद्यालय में पानी की व्यवस्था भी पूर्णरूप से होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों को इधर-उधर भटकना न पड़े। विद्यालय के अन्दर ब्लैक-बोर्ड, चॉक, स्टूल-टेबल तथा पेशाब-घर इत्यादि की व्यवस्था अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।

इसके अलावा बच्चों को पढ़ाने का तरीका ऐसा होना चाहिए जिससे जो पढ़ाया जा रहा है वह समझ में आ सके। मेरा मानना है कि विद्यार्थियों को, जो भी विद्यालय में पढ़ाया जाता है, वह चित्रों द्वारा पढ़ाया जाना चाहिए।

आजकल विद्यालयों में अनुशासन बहुत कम दिखाई देता है। विद्यार्थी जीवन की सबसे महत्वपूर्ण चीज़ अनुशासन होता है। बच्चों के प्रति शिक्षकों का व्यवहार अच्छा होना चाहिए। बच्चों को कभी भी शारीरिक दण्ड नहीं देना चाहिए। इससे बच्चे का उस शिक्षक के प्रति जो प्यार-भाव होता है, वह उठ जाता है। बच्चे को पीटकर जितना नहीं सिखाया जा सकता, उतना समझा-बुझाकर सिखाया जा सकता है।

शिक्षक जितना बच्चे को प्यार करेगा उतना ही वह शिक्षक का आदर करेगा। अध्यापकों को उतना पढ़ाना चाहिए जितना बच्चा आराम से सीख सके। बच्चों के सामने या विद्यालय भवन में शिक्षकों को धूम्रपान नहीं करना चाहिए। इसके बदले में बच्चों को यह सिखाया जाना चाहिए कि इस धूम्रपान से हमारे स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। विद्यालय के अन्तर्गत चपरासी भी होना अनिवार्य है। विद्यालय में खेल के मैदान तथा खेल का जहाँ तक हो सके, पूरा सामान होना चाहिए। जिससे छात्र पढ़ने के अलावा खेल भी खेल सकें जो कि विद्यार्थियों के लिए ज़रूरी है।

इसके अलावा छात्रों को भ्रमण भी करवाना चाहिए। ऐसे स्थान पर भ्रमण के लिए जाना चाहिए, जिससे छात्रों को सामान्य ज्ञान प्राप्त हो सके। यही मेरी आशा है।

● रमेशकुमार लोहार, जालौर, राजस्थान

डाँट ही पिटाई लगती है

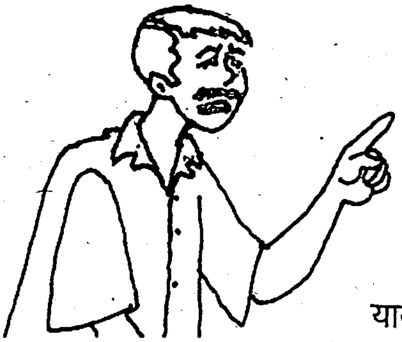

अब मैं कक्षा दस में चली गई हूँ पर आज तक मुझे ऐसा कोई वाकया याद नहीं है कि मैंने इतने लम्बे अंतराल में कभी पिटाई खाई हो। पिटाई से कैसा महसूस होता है, यह मुझे आज तक अनुभव नहीं है।

मेरी मम्मी तो मुझे डाँटती तक नहीं है। पर पापा को जब मेरे को पढ़ाते समय गुस्सा आता है और वह मुझे बेवकूफ कहते हैं, तो मुझे यह चाँटे के बराबर ही लगता है। जब मेरे पापा को गुस्सा आता है तो उनका मुँह फूल के कुप्पा हो जाता है।

मुझे पापा के गोलगप्पे जैसे मुँह को देखकर उस समय हँसी तो बहुत आती है। पर पापा की डाँट के डर से मैं चुपचाप बैठी रहती हूँ। पर जब पापा का गुस्सा शान्त हो जाता है तो मैं पापा का मजाक बना देती हूँ, और मम्मी और दीदी के संग-संग पापा भी ठहाके लगाने लगते हैं। मेरे पापा की डाँट ही मेरी पिटाई के बराबर होती है। उसके बाद का समय मेरी मिठाई के बराबर होता है।

माता-पिता हमें पीटते इसलिए हैं कि जो भूल हमने उस समय की है वो हम सुधार लें। पिटाई से वह जताना चाहते हैं कि हम तुम्हारे ऊपर ध्यान दे रहे हैं। तुम अपनी ये गन्दी आदत को अपने व्यवहार से उसी तरीके से निकाल फेंको जिस तरह दूध में से मक्खी निकाल फेंकी जाती है।

माता-पिता या अन्य बड़ों को बच्चों को पीटने का अधिकार उस समय होना चाहिए जब वे हमारी कोई गन्दी आदत को सुधारना चाहें और हमारे व्यवहार को दर्पण-सा निखारना चाहें।

● मनु पाण्डे, चौदह वर्ष, अल्मोड़ा, उत्तरप्रदेश

कोई व्यवस्था नहीं

हाँ, मैं मेरे स्कूल में बदलाव कराना चाहता हूँ। स्कूल के अन्दर किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं है। बच्चे दिन भर शोर मचाते हैं। इसके लिए अध्यापकों से अनुरोध है कि बच्चों की तरफ देखें। बच्चों के बैठने के लिए कमरे नहीं हैं, हम धूप में जलते हैं। स्कूल आठवीं तक है, कमरे तीन हैं। बच्चे कहाँ बैठें?

अध्यापकों का पढ़ाने का तरीका गलत है। आज एक पाठ पढ़ाया तो कल दूसरा पाठ पढ़ा दिया। एक-दो महीने में पूरे पाठ पढ़ा लेते हैं। फिर बच्चे मस्ती करते हैं।

पढ़ाने का तरीका यह होना चाहिए कि एक पाठ पढ़ाया और दूसरे दिन उस पाठ के प्रश्न पूछे। शिक्षकों का व्यवहार भी अच्छा नहीं है। होशियार को परीक्षा में नम्बर ज़्यादा और ढोर को जितने दिए उसमें भी कटोत्तरी करना। स्कूल में पीटीआई,

चपरासी आदि कोई नहीं। आठवीं का स्कूल, चार अध्यापक हैं। प्रधानाध्यापक भी नहीं।

● नरेन्द्र आजाद, सातवीं, बाड़मेर, राजस्थान

प्यार से समझाएँ

जब पिटाई होती है तो मन सिर्फ ये सोचता है कि मुझसे क्या गलती हो गई है, जिसके कारण पिटाई हुई। यदि गलती जान-बूझकर की जाती है, तो पछतावा होता है कि मैंने ऐसा काम किया ही क्यों, जिससे पिटाई हुई। यदि हम पिटाई करने वाले के स्थान पर खुद को रखकर देखें कि यदि उससे गलती हुई होती, और उसकी जगह हम होते तो क्या करते? यदि हम ऐसा सोचकर देखें तो हमें अपनी गलती का अहसास होता है। हम निश्चय करते हैं कि आगे से हम कभी ऐसी गलती नहीं करेंगे।

जब हमसे कोई गलती हो जाती है, हम बड़ों का कहना नहीं मानते, या किसी बात को समझकर भी, जान-बूझकर कोई गलत काम करते हैं या शरारत करते हैं तो बड़े हमें पीटते हैं। पर यदि हमसे अनजाने में कोई गलती हो जाती है और उस पर हमारी पिटाई की गई हो, तो कभी-कभी गुस्सा भी आ जाता है कि आखिर कोई हमारी सुने बिना, हमें समझे बिना, हमें क्यों पीटता है? तब हम किसी से कुछ कह भी नहीं सकते, बस रोते रहने को मन करता है। तब यदि कोई कहे रोओगे, तो और पिटाई करेंगे, फिर तो बहुत गुस्सा आता है।

वो पिटाई से शायद यह जताना चाहते हैं कि यदि तुम गलती करोगे तो पिटाई होगी, इसलिए जैसा हम कहते हैं, वैसा करो। क्योंकि हम बड़े हैं, हमें तुमसे ज़्यादा अनुभव है। पर वो ये क्यों नहीं सोचते कि क्या पिटाई से ही हर किसी को सुधारा जा सकता है? यदि कोई गलती होने पर वे हमें प्यार से वही बात समझाएँ जो पिटाई करके या डाँट-डपट करके समझाते हैं तो हमें अच्छा भी लगेगा, और हम अपनी गलती को सुधारने की कोशिश भी करेंगे।

● विनोद कुमार सोनी, दसवीं,
गढ़ाकोटा, सागर, म.प्र.

मेरी राय

मैं कक्षा ग्यारह की छात्रा हूँ। अभी तक मैं छठवीं से दसवीं तक एडम्स में पढ़ी हूँ। अब शायद मैं दूसरे स्कूल में जाऊँ, क्योंकि एडम्स इंटर कॉलेज में गणित नहीं है और मैं गणित लेना चाहती हूँ। खैर, ये बात तो अलग है पर मैं अपने वर्तमान स्कूल अर्थात् एडम्स के बारे में ही लिखूँगी, क्योंकि मैं नए स्कूल के वातावरण से अनभिज्ञ हूँ।

सबसे ज़रूरी अनुशासन है। यदि किसी स्कूल में अनुशासन हो तो वह सारे विद्यालयों से बेहतर होगा। अनुशासन डाँट-डपट से नहीं बनवाना चाहिए। बल्कि उन्हें ऐसा करना चाहिए कि जो सबसे अधिक अनुशासित रहेगा उसे ईनाम दिया जाएगा। यह तो एक बात है, अब दूसरी बात।

शिक्षकों का पढ़ाने का ढंग भिन्न होना चाहिए। यह रटाने का ढंग बिल्कुल नहीं होना चाहिए। बच्चों की पढ़ाई में रुचि जाग्रत करनी चाहिए। बच्चों को इतना गृहकार्य दिया जाता है कि उनका मन पढ़ाई से उचट जाता है। वे स्कूल जाने से कतराने लगते हैं। बच्चे के दिमाग में टेंशन हो जाता है और उसका स्वास्थ्य गिरने लगता है। वह कई बीमारियों का शिकार हो जाता है।

शिक्षकों की भाषा प्यार की होनी चाहिए, उन्हें हर विषय रोचक ढंग से पढ़ाना चाहिए। रटाना नहीं चाहिए बल्कि समझाना चाहिए। इस प्रकार बच्चा जल्दी सीखेगा। पढ़ाई के अलावा कई अन्य कक्षाएँ भी होनी चाहिए जैसे खेलकूद, नाच-गाने और यौन शिक्षा की कक्षा आदि।

मैंने हाल ही में एक किताब में पढ़ा था कि अमेरिका में एक सर्वेक्षण किया गया। कुछ बच्चों को उचित मात्रा में खेलने-कूदने दिया और कुछ को पढ़ाई में जोते रखा। अन्त में परिणाम से पता चला कि जिन्होंने खेला-कूदा उनका दिमाग व गणित उन बच्चों की अपेक्षा बहुत अच्छा था जो कि रात दिन पढ़ाई में जुटे रहते थे।

हमारे देश में अशिक्षा बहुत है। यौन शिक्षा के बारे में कुछ नहीं मालूम। बच्चे गलत संगति का शिकार हो रहे हैं। यदि वह कुछ इस तरह की बातें घर-परिवारवालों या बाहर वालों से पूछता है तो उसे डाँट, यहाँ तक कि मार भी पड़ती है। इस कारण वह गलत भ्रांतियों का शिकार हो जाता है। अतः यौन शिक्षा स्कूल में पढ़ाए जाने वाले विषयों का एक अनिवार्य अंग होना चाहिए। यदि यह सब हमारे ही नहीं, सब विद्यालयों में हो जाए तो स्कूल ही नहीं देश का भविष्य भी उज्ज्वल हो जाएगा।

● अनुरुचि पाण्डे, ग्यारहवीं, अल्मोड़ा, उत्तर प्रदेश

हमारे भविष्य के लिए

आम तौर पर जब हमें बड़ों से मार पड़ती है तो हम उनके बारे में बुरी बातें सोचते हैं जैसे - इन बड़ों ने आखिर अपने आप को क्या समझ रखा है। लेकिन हमको ऐसा नहीं सोचना चाहिए क्योंकि वह

हमारी भलाई के लिए ही हमें डाँटते हैं। सोचते वक्त हम यह सब बातें भूल जाते हैं। लेकिन कई बार बड़े इसका गलत फायदा उठाते हैं।

हालाँकि, मैं भाई-बहनों में सबसे बड़ी हूँ। बीच में मैं अपनी वहन को ज़रा-ज़रा सी बात पर मारती थी। पापा-मम्मी और दूसरे अन्य लोग मुझे बार-बार टोकते पर मेरी आदत नहीं जाती।

मेरी बहन जो कि पाँचवीं कक्षा में पढ़ती है, दिखने में बहुत छोटी दिखती है। ऐसा लगता है कि कोई पहली-दूसरी की बच्ची हो। कभी-कभी मैं उसे सही बात पर भी डाँटती हूँ तो आधे लोग उसकी तरफ से बात करते हैं क्योंकि वह मुझसे बहुत छोटी दिखती है। और इसी बात पर मुझे डाँट देते हैं। मुझे उस समय बहुत बुरा लगता है। कोई भी मेरी तरफ से नहीं बोलता है। हालाँकि कई बार मेरी भी गलती होती है, लेकिन बहुत बार मेरी बहिन की भी गलती होती है।

अधिकतर घरों में बड़े बच्चों की शिकायत होती है कि माँ-बाप छोटों को ज़्यादा प्यार करते हैं, लेकिन हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए। पहले मेरी भी यही शिकायत थी, लेकिन अब नहीं है। हमारे माता-पिता हमारे भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए ही यह सब करते हैं।

● अक्षया शर्मा, भोपाल, मे.प्र.

बहुत कोशिश करता हूँ

मुझे पिटना बहुत खराब लगता है। आज ही मेरी पिटाई हुई है। मैं बताऊँ क्यों -

मेरी छुट्टियाँ खत्म हो गई थीं। छुट्टियों में मेरी मम्मी ने मुझे खूब पढ़ाया था। स्कूल खुलते ही अगले दिन मेरा टेस्ट था। मेरा टेस्ट हो गया। मेरे नंबर खराब आए। मम्मी को जब पता चला तो गुस्सा हुईं। फिर मम्मी ने सुबह काम दिया था जिसे मैं दोपहर तक नहीं कर पाया। जब मैंने दोपहर में मम्मी से कहा कि मैं कम्प्यूटर खेलने जा रहा हूँ तब मम्मी ने काम देखा जो कि पूरा नहीं था। संयोग की बात मम्मी के हाथ टेस्ट की कॉपी पड़ गई जिसमें मेरे खराब नम्बर आए थे। मम्मी ने जो टेस्ट की चीज़ बार-बार समझाई थी। वही मैंने गलत कर दी थी। इसलिए मेरी पिटाई हुई। मैं बहुत रोया।

मम्मी-पापा इसलिए पीटते हैं क्योंकि हम दुबारा अपनी गलती न करें और गलती को सुधारकर अच्छे नम्बर ला सकें।

मेरे पड़ौस में एक लड़का रहता है। उसका नाम है श्याम। उसके हर टेस्ट में पूरे में से पूरे मार्क्स आते हैं। मुझे मेरी मम्मी इसलिए पीटती है कि मैं भी उसकी तरह मार्क्स लाऊँ। मैं कोशिश भी बहुत करता हूँ पर तब भी खराब नम्बर आते हैं।

मम्मी बहुत बार बोलती हैं कि एक घंटे में आ जाना। मैं भूल जाता हूँ और लेट आता हूँ। इसलिए मेरी पिटाई हो जाती है। मैं भी बहुत कोशिश करता हूँ पर लेट हो जाता हूँ। बताइए मैं क्या करूँ?

मम्मी-पापा को पीटने का अधिकार नहीं होना चाहिए, बशर्ते हम उनका दिया हुआ काम पूरा करें।

● अचिन्त्य शर्मा, सातवीं, बड़ौदा, गुजरात

सभी चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

कब होगी अच्छी पढ़ाई

मैं इस समय बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष में हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि कॉलेज से कहीं ज्यादा अच्छा होता है, स्कूल का माहौल।

जब मैं पहली क्लास में थी। तो मुझे ऐसा लगता था कि शायद अगली क्लास में अच्छी पढ़ाई होगी। ऐसा करते-करते मैं पाँचवीं क्लास में पहुँची, तो मुझे लगा कि अब तो बोर्ड परीक्षा है, शायद इस बार अच्छी पढ़ाई होगी। उस समय मैं बस यह जानती थी कि बोर्ड-परीक्षा बहुत कठिन होती है। मैंने जमकर पढ़ाई की और अच्छे नम्बर से पास हुई। मुझे ईनाम भी मिला। मैंने सोचा कि अब मैं मिडिल स्कूल में जाऊँगी, वहाँ तो पढ़ाई अच्छी ही होगी। लेकिन जब क्लास शुरू हुई तो पहला दिन तो बहुत अच्छा गया। पर दूसरे दिन से मुझे बहुत बुरा लगने लगा। क्योंकि जो भी शिक्षक क्लास में आते, और कहते कि ये क्लास तो सबसे बेकार है, कचरा है। थोड़ा-बहुत पढ़ाते और कहते - प्रायमरी स्कूल के शिक्षकों ने कुछ नहीं पढ़ाया और छठवीं क्लास में भेज दिया।

मुझे तो बहुत बुरा लगा कि यहाँ शिक्षकों को बच्चों की इंसल्ट करने के अलावा कुछ आता भी है या नहीं? क्या शिक्षकों का बच्चों से बात करने का यही तरीका होता है? जब मैं आठवीं के बाद नवमीं में पहुँची तो वहाँ भी इसी तरह की बातें सुनने को मिलीं। एक शिक्षक ने तो यह कहा कि यह क्लास तो बिल्कुल डब्बा है। मिडिल स्कूल का कचरा यहाँ धकेल दिया।

क्या सारा दोष पिछली क्लास के शिक्षकों का होता है या फिर शिक्षक बच्चों को पढ़ाने से कतराते हैं या वास्तव में बच्चे ही इसके लिए दोषी हैं? मेरे दिमाग में ऐसे कई प्रश्न उठते रहते हैं।

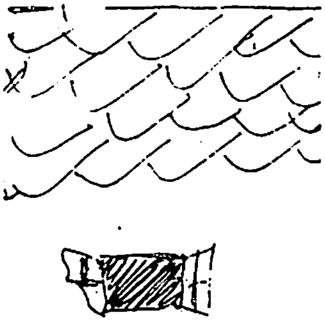

मैंने पढ़ा है, ''गुरू कुम्हार, शिष्य कुम्भ है'' अर्थात् गुरू तो उस कुम्हार के समान हैं, जो बालक रूपी घड़े को सुसंस्कृत (सुडौल) बनाने के लिए बाहर से पीटते हैं, लेकिन हृदय की तरह कोमल (भीतरी भाग में) गद्देदार सहारा भी देते हैं। परन्तु हमारे शिक्षक तो केवल हमें बाहर से पीटते हैं, जिसके कारण हमारे मन की भावनाएँ टूटकर बिखर जाती हैं। शिक्षकों से डर सा लगने लगता है। शिक्षकों से घृणा, पढ़ाई में बोरियत और विषय के प्रति घबराहट होने लगती है।

स्कूल की बिल्डिंग बहुत अच्छी हो यह ज़रूरी नहीं है। उस बिल्डिंग को एक ऐसा विद्या मंदिर बनाने की आवश्यकता है। मैंने टी.व्ही. पर एक नाटक 'नटखट रानी' देखा। मुझे बहुत अच्छा लगा, क्योंकि मैं जैसा सोचती हूँ उसमें वैसे ही एक स्कूल का वर्णन है। बच्चे शिक्षकों की बातें सुनते हैं एवं शिक्षक बच्चों की बातें सुनते हैं, और एक-दूसरे की गलतियों को सुधारने की कोशिश करते हैं। क्या वास्तव में ऐसे शिक्षक भी होते हैं?

अब हमारे विषयों पर चलते हैं। सबसे पहले हिन्दी विषय पर। पहली से लेकर बारहवीं तक के

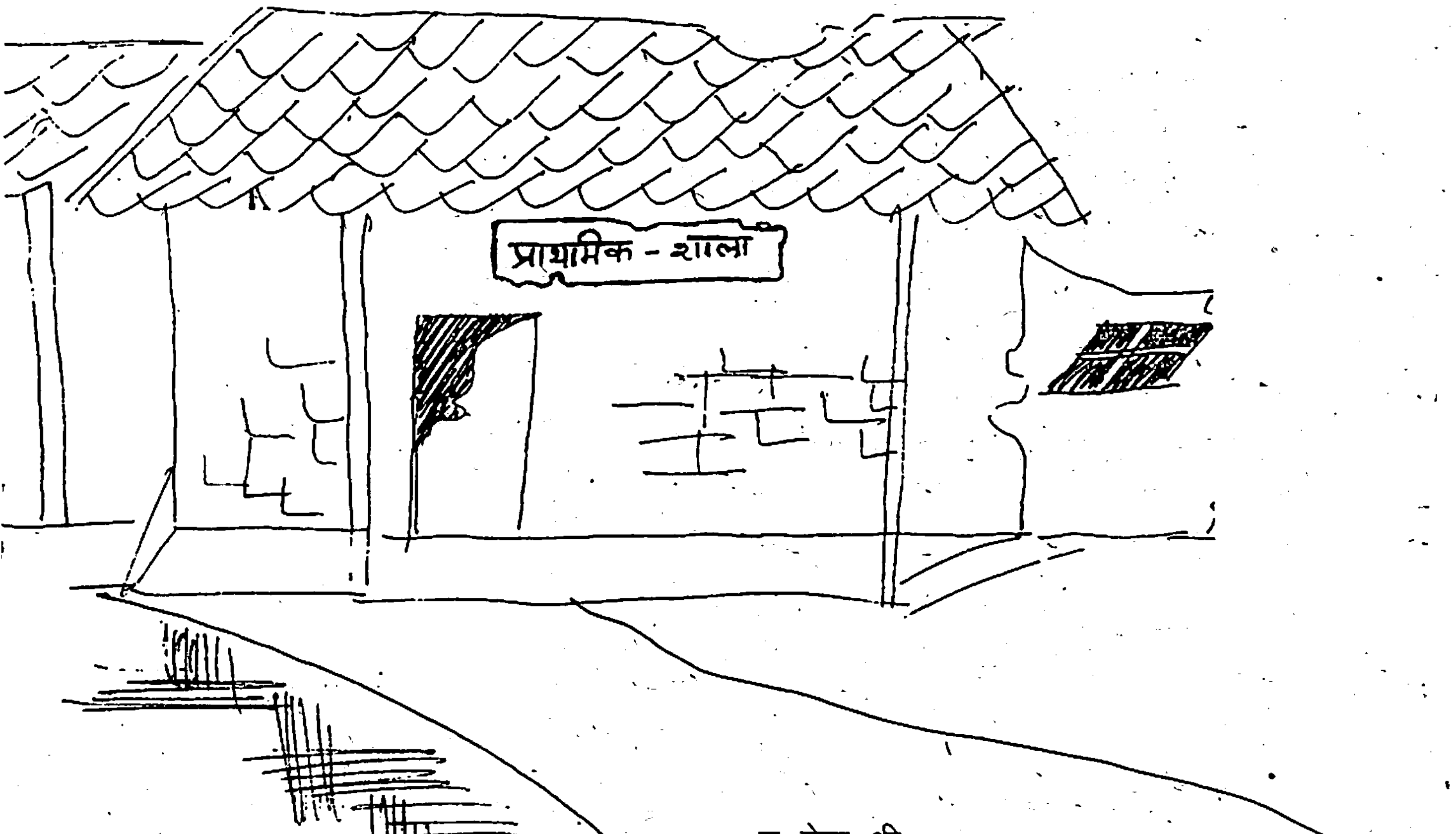

अनुभव से मुझे ऐसा लगता है कि सही तरीके से हिन्दी पढ़ाने वालों की बहुत कमी है। क्योंकि हमें तो शिक्षक ने गाइड से कॉपी में लिखा दिया और हमने रट लिया। अच्छे अंक भी प्राप्त हो गए। किन्तु ऐसा नहीं होना चाहिए। कई माता-पिता अच्छे अंक प्राप्त करने पर यह समझते हैं कि उनका बच्चा पढ़ने में बहुत अच्छा है। परन्तु वे यह जानने की कोशिश कभी नहीं करते कि बच्चा क्या पढ़ रहा है, और वह जो पढ़ रहा है क्या वह सही है। माता-पिता का बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान न देना भी बच्चों की पढ़ाई में अरुचि का एक महत्वपूर्ण कारण है।

हिन्दी की एक मैडम ने हमें सिर्फ एक महीने ही हिन्दी पढ़ाई थी। उतने कम समय में भी हमने उनसे बहुत कुछ सीखा। उन्होंने हमें कहानी का कथानक लिखने को कहा था। हमने लिखकर दिखाया तो उन्होंने कहा यह तो गाइड की भाषा है, अपने मन से लिखो। तब मैंने हिन्दी की किताब से कहानी को अच्छी तरह पढ़ा-समझा और फिर लिखा। इस बार मैडम ने कहा अब ज्यादा बेहतर है। मुझे अपनी गलती समझ में आ गई।

प्राथमिक कक्षाओं में प्रायः शिक्षक कॉपी पर बिना पढ़े सही का निशान लगा देते हैं और अच्छे अक्षर देखकर गुड या वेरी गुड लिख देते हैं। जबकि होना ये चाहिए कि कॉपी को पढ़कर गलतियों को सुधारें तथा रिमार्क दें। मैंने अपनी पिछली कक्षाओं की कुछ कॉपियों के पन्ने पलटकर देखे तो जहाँ पर सही का निशान है, वही वाक्य गलत लिखा है।

यदि हमें अच्छे शिक्षक पढ़ाते भी हैं तो संस्था प्रधान द्वारा उन्हें इतना काम दे दिया जाता है कि वे एक सप्ताह की पढ़ाई एक ही दिन में पूरा करा देत हैं। अभी तक तो हम बच्चों और शिक्षकों के बारे में संस्था प्रधान से शिकायतें करते रहे। लेकिन अब हम किससे कहें कि –

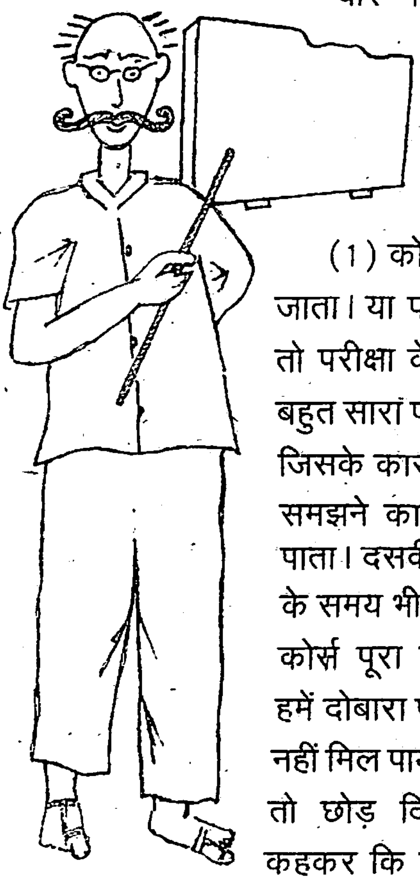

(1) कोर्स पूरा नहीं पढ़ाया जाता। या पढ़ाया भी जाता है तो परीक्षा के एक दिन पहले बहुत सारा पढ़ा दिया जाता है। जिसके कारण हमें पढ़ने और समझने का समय नहीं मिल पाता। दसवीं की बोर्ड परीक्षा के समय भी हमें दो दिन पहले कोर्स पूरा कराया गया था। हमें दोबारा पढ़ने का समय ही नहीं मिल पाया। और कुछ पाठ तो छोड़ दिए गए थे, यह कहकर कि इन पाठों से कुछ नहीं आता।

(2) हमारे पीरियड समय पर नहीं लगते।

(3) स्टाफ रूम में शिक्षक सोते रहते हैं या फिर मैडम स्वेटर बुनती रहती हैं।

(4) कॉपी भी चेक नहीं होती।

(5) टेस्ट सभी विषय के नहीं होते। टेस्ट सही तरह से चेक नहीं होते। यदि हम यह शिकायत लेकर उन्हीं शिक्षक के पास जाते हैं तो गुस्से में आकर कहते हैं – बताओ कितने नम्बर बढ़ाने हैं? 100 में से 100 दे दें क्या? वे हमारी बात क्यों नहीं समझ पाते कि हम तो अपनी गलती सुधारना चाहते हैं, नम्बर नहीं बढ़वाना चाहते।

कॉलेज में तो और भी बुरा हाल है। छात्र-छात्राएँ ही कॉलेज नहीं आते। कुछ आते हैं तो प्राध्यापक स्टाफ रूम से उठकर ही नहीं आते। लगता ही नहीं कि शिक्षा के प्रति किसी का कोई उत्तरदायित्व भी है।

मेरे सीनियर छात्रों ने बी.एस-सी. परीक्षा भी दे दी पर तीन वर्षों में प्रयोगशाला में शायद ही कोई प्रयोग किया हो। तब उन्होंने 'विज्ञान के प्रयोग' पढ़े या करके समझे?

मेरी शिक्षा का सफर उत्साहवर्धक कम, अरुचिकर अधिक रहा। मेरे माता-पिता की शिक्षा के प्रति जागरूकता मुझे इस स्तर तक ला पाई है। जिनके परिवार में कोई भी शिक्षित न हो उनका तो न शिक्षक, न शिक्षण पद्धति, न शिक्षा अधिकारी और न शिक्षा मंत्री, शायद ईश्वर ही रखवाला है।

भारती चौहान, टिमरनी, म.प्र.

चित्र : शहला खान

पहेलियाँ

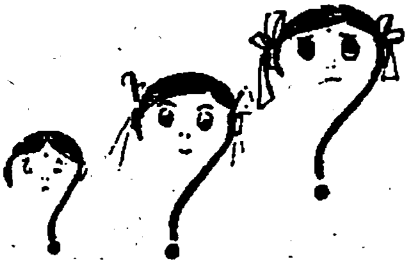

॥ 1 ॥

पाँच कबूतर पाँचों रंग
महल में जाकर एक ही संग।

॥ 2 ॥

दो अक्षर का मेरा नाम
इच्छा करना मेरा काम।

॥ 3 ॥

हरा वृक्ष है, हरी है डाली।
पर वह है लकड़ी से खाली॥

॥ 4 ॥

हरी डंडी, लाल कमान,
तौबा, तौबा करे पठान॥

● ललित उपाध्याय, सागर, म.प्र.

॥ 5 ॥

धूप लगे पैदा हो जाता
छाँव लगे तो कुम्हला जाता
सभी ने इसका अनुभव पाया
हवा लगे तो उड़ जाता।

● नितिन खरे,
मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

॥ 6 ॥

पंख नहीं पर उड़ती हूँ
हाथ नहीं पर लड़ती हूँ
सब बच्चों के साथ खेलने जाती हूँ
सब बच्चों को मैं भाती हूँ।

● रविशंकर अजनेरिया,
आमूपुरा, होशंगाबाद, म. प्र.

॥ 7 ॥

हरी डंडी हरा दाना
खाने के बाद माँगकर खाना

॥ 8 ॥

काला हाथी उड़ता जाए
ज़ंजीरों से ना पकड़ाए

॥ 9 ॥

बचपन हरा बुढ़ापा लाल
जो भी खाए हो बेहाल

● सुरेन्द्र कुमार प्रजापति, अजमेर, राजस्थान

माथापच्ची

(1)

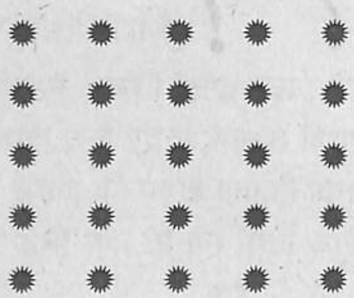

ये पच्चीस बिन्दु कम से कम कितनी सीधी रेखाओं द्वारा जोड़े जा सकते हैं, जबकि एक बिन्दु से एक ही रेखा गुज़रे ?

(2)

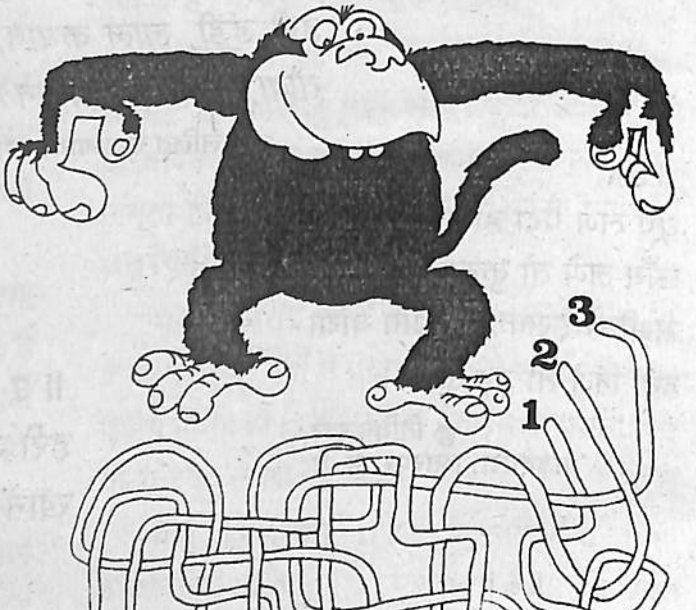

आज जनाब चिम्पांजी को नाश्ते में केला मिलने वाला है। पर वह केले तक पहुँचें कैसे ? कौन- सा रास्ता लेना होगा उन्हें ?

(3)

तुम अपने कमरे में एक दीवार की ओर मुँह करके बैठे हो। बगैर दर्पण का इस्तेमाल किए क्या तुम अपने से पीछे की, यानी जिस तरफ तुम्हारी पीठ है, उस तरफ की दीवार का रंग बता सकते हो?

(4)

एक दिन जब मैं बाज़ार से लौट रहा था तो मुझे रास्ते में एक सज्जन मिले। वो मेरे ही घर के पास रहते हैं। उनके साथ उनके 4 बच्चे भी थे। हर बच्चे के हाथों में 4 थैले थे और उन चारों थैलों में 3 - 3 कुत्ते और हर चौथे थैले में एक-एक लौकी थी। अब ज़रा तुम हिसाब लगाओ कि मेरे साथ बाज़ार से कुल कितने लोग वापस आए?

(5)

बाजू में बने इस चित्र में कई तरह की चीज़ें हैं। हमें लगता है कि इन चीज़ों को पाँच जोड़ियों में बाँटा जा सकता है। यानी जोड़ी मिलाने का खेल।

तो तुम जोड़ी मिलाओ और अगले अंक में देखना कि तुम्हारी जोड़ी हमारी जोड़ी से मिलती है कि नहीं।

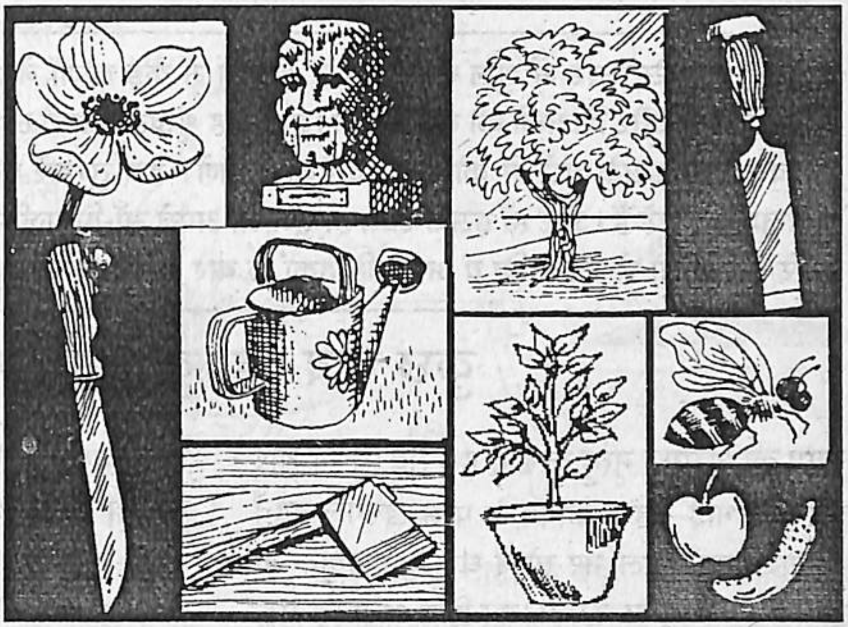

(6)

दाईं ओर बने खाके में कुछ अक्षर और मात्राएँ लिखी हैं। इन्हें जोड़कर कुछ ऐसे शब्द बनाओ जिनका उपयोग तुम बोलचाल में करते हो।

द	म	ा	र
म	ी	चे	व
थ	च	प	ड़
ज	इ	ा	्र

(7)

मैं एक बहुत ही विशेष संख्या के बारे में सोच रहा हूँ। जानना चाहते हो, यह कौन-सी संख्या है? तो उठाओ पेन व कागज़ और लगाओ हिसाब। यदि इस संख्या का

तीन गुना करो।

इसमें से सात घटाओ।

अब इसे दुगुना करो।

तो यह संख्या 10388 हो जाती है। एक बात और बताना, कि यह संख्या विशेष क्यों है?

(8)

* * *
* * *
* * *

1908

तुमको 0 से 9 तक के अंक इन सितारों की जगह भरने हैं। लेकिन शर्त यह है कि एक अंक का प्रयोग तुम केवल एक बार ही कर सकते हो।

(9)

एक समारोह में एक व्यक्ति को सिर्फ इसलिए बिठाया गया कि वह आने वाले मेहमानों की कुल संख्या का हिसाब रखे।

यह महाशय गणित के शौकीन थे। तो इन्होंने सीधे-सीधे लोगों को गिनने के बजाय यह गिना कि समारोह में कुल 66 हाथ मिलाई हुईं। अब अगर यह मान लें कि समारोह में आए हर व्यक्ति ने बाकी सबसे हाथ ज़रूर मिलाया होगा, तो भी क्या इस जानकारी से कुल व्यक्तियों की संख्या निकाली जा सकती है?

हमारे शिक्षक : 14

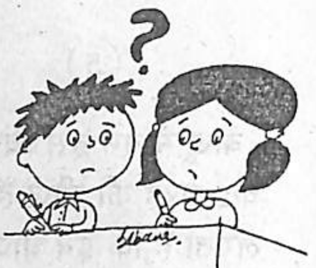

पिछले साल सितम्बर में शुरू की गई इस शृंखला में कई लोगों ने अपने स्कूली जीवन और शिक्षकों की बातें लिखीं। तुम्हें यह शृंखला कैसी लग रही है? क्या तुम इसके बारे में कोई सुझाव देना चाहोगे? हम तुम्हारे पत्रों का इन्तज़ार कर रहे हैं। और हाँ इसके साथ ही तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे अपने शिक्षकों के बारे में याद करके कुछ लिखें।

कुछ याद रहे, कुछ भूल गए

पापा की असमय मृत्यु के बाद हम सब (मम्मी और हम चार भाई-बहन) काका के पास खरगोन रहने आ गए। यहाँ साल भर तो मैं घर के नज़दीक के ही सरकारी स्कूल में पढ़ा। पर फिर अचानक एक दिन सत्र के प्रारम्भ होने के दो माह बाद जब काका ने मुझे घर से बेहद दूर के एक स्कूल में दाखिल करवा दिया, तो मुझे उन पर बेहद गुस्सा आया।

पहले तो सुबह की पाली में स्कूल जाकर सारी दोपहर खेलने-कूदने को मिलता था। पर अब यहाँ

चौथी कक्षा जैसी छोटी-सी कक्षा में भी नियम और कायदों का कड़ाई से पालन होते देख, चंचल मन पहले-पहल नए वातावरण में रहने को न माना। पर फिर जोशी दीदी, उपाध्याय दीदी, कोठारी दीदी, परसाई दीदी (स्कूल में हम शिक्षिकाओं को 'दीदी' और शिक्षकों को 'आचार्य' कहते थे) का स्नेह और संस्कृत, गणित, विज्ञान जैसे कठिन विषयों के प्रति रूचि पैदा करनेवाला उनका जादूभरा पढ़ाने का तरीका बरबस ही आकर्षित कर गया।

जोशी दीदी और कोठारी दीदी मुझे ही नहीं सारे स्कूल को प्रिय थीं। हर बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान देना उनकी विशिष्टता थी। हाथ तो कभी उन्होंने उठाया नहीं, चाहे विद्यार्थी कितना ही शरारती क्यों न हो। ऐसे विद्यार्थियों के माता-पिता से मिलकर, बातें करके और फिर मीठी बातों द्वारा ही शरारती विद्यार्थियों को सीधा कर दिया था दोनों दीदियों ने।

प्राथमिक विभाग को सफलता से पार करने के बाद, छठवीं कक्षा से माध्यमिक विभाग में कुछ अलग ही तरह के शिक्षक/शिक्षिकाओं से पाला पड़ा। अंग्रेज़ी पढ़ाने वाली शर्मा दीदी और गणित

पढ़ाने वाले शर्मा आचार्यजी किसी मायने में हिटलर से कम न थे। शर्मादीदी तो समझ न आने पर कुछ भी पुनः पूछने पर बेहद गुस्सा होतीं और ढब्बू, ढपोर जैसी उपाधियों से विभूषित भी कर देतीं। शीघ्र ही उनकी शादी हो गई और वे नौकरी छोड़कर चली गईं। फिर कभी हमने उन्हें याद नहीं किया।

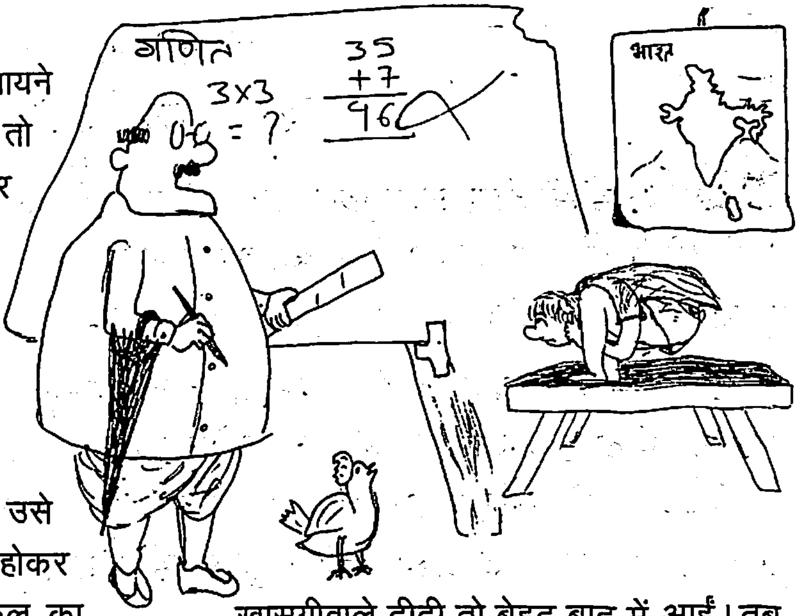

अधिक गृहकार्य मिलने पर जब उसे पूरा न कर पाते तो कक्षा के बाहर खड़े होकर कोमल हथेलियों पर लकड़ी के स्केल का सीधा प्रहार सहन करना पड़ता। कभी-कभी तो सारे पीरियड कक्षा के बाहर खड़े रहकर अपमानित भी होना पड़ता था। शर्मा सर की ऐसी शिक्षण पद्धति किसी को भी पसन्द न थी। पर उनके कड़क व्यवहार की वजह से स्कूल के सारे विद्यार्थी अनुशासन से बँधे थे।

एक और शिक्षक का चेहरा जेहन में आता है, ऊर्ध्वरेशे आचार्यजी। कद चार-साढ़े चार फीट से ज़्यादा न था उनका। चश्मे और धोती कुर्ते से सजे संस्कृत के प्रकांड पंडित ही लगते थे। पर हमें वे हिन्दी विषय पढ़ाते थे। स्कूल के पूर्व होने वाली प्रार्थना भी वे ही करवाते। इस बीच अगर कोई विद्यार्थी गलत उच्चारण कर देता तो उसे प्रार्थना के बाद सबके सामने खड़ा कर बुरी तरह पीट भी देते थे।

सामाजिक अध्ययन पढ़ाने वाले आर्य आचार्यजी इस सब शिक्षकों के विपरीत, बेहद कोमल स्वभाव के थे। पढ़ाई के साथ-साथ वे स्कूल में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए नाटक वगैरह भी तैयार करवाते। अभिनय करने की क्षमता रखने वाली कई प्रतिभाओं को स्टेज प्रदान किया उन्होंने।

खासगीवाले दीदी तो बेहद बाद में आईं। तब तक हम आठवीं में आ चुके थे। ये दीदी हमें विज्ञान पढ़ाती थीं और कभी-कभी हमसे ढेरों बातें भी करतीं। अपने विचार, समस्याएँ व्यक्त कर देने की खुली छूट थी उनके सामने हमें। परीक्षा के चार माह पूर्व उन्होंने कक्षावार प्रथम स्थान और पूरी स्कूल में प्रथम आने वाले विद्यार्थी को अपने पति 'डॉ. अरूण खासगीवाले' की स्मृति में पुरस्कृत करने की भी घोषणा की। इसका परिणाम यह निकला कि उस वर्ष हमारी स्कूल का परिणाम पूरे शहर की स्कूलों की तुलना में श्रेष्ठ था।

फिर तो पुनः सरकारी स्कूल में आना पड़ा। शहर में मात्र एक वही हाईस्कूल जो था।

ये तो शिक्षकों की बातें हुईं। पर एक बात और कहना चाहूँगा। मुझे लगता है कि प्राथमिक स्तर तक अगर महिला शिक्षक ही बच्चों को पढ़ाएँ तो उन्हें पूरी तरह खिलने का बेहतर और पूरा-पूरा अवसर प्राप्त होता है। अतः प्राथमिक विभाग तो महिलाओं को ही सौंप देना चाहिए। आखिरकार बच्चे की प्रथम गुरू भी तो एक महिला ही होती है।

● **आशीष दलाल**

● **चित्र : मरीना और अखलाक**

गणित के खेल

अंक पता करो

अच्छा! कोई भी तीन अंकों की संख्या सोचो। उसे पलटकर लिख लो। अब बड़ी संख्या में से छोटी को घटा दो। प्राप्त संख्या का पहला या तीसरा, कोई भी एक अंक बताओ। तुम्हारे अन्य दो अंक ये थे।

इस तरह का सवाल कभी न कभी तुमने ज़रूर सुना होगा! तुम्हें लगा होगा, कि पूछने वाला कोई जादू जानता है। या फिर गणित का खूब बड़ा ज्ञानी है। नहीं तो हमारी सोची गई संख्या उसे कैसे मालूम? वास्तव में इस और इस जैसे अन्य सवालों में बिल्कुल आसान से गणित के अलावा और कुछ नहीं होता।

तुम जानना चाहोगे कि आखिर इन सवालों का रहस्य क्या है? पहले कुछ सवाल लें, फिर उनका हल और उनके पीछे छिपा गणित!

कोई भी तीन अंकों वाली संख्या सोच लो। अब संख्या के तीनों अंकों को जोड़ लो। जो जोड़ आया, उसे मूल संख्या में से घटा दो। प्राप्त संख्या का कोई भी एक अंक गुप्त रखकर बाकी के दो अंक मुझे बताओ। मैं तुम्हें तुम्हारी संख्या का तीसरा गुप्त अंक बता सकता हूँ।

पहले खुद सोचकर देखो। क्या कोई संकेत या राज़ पकड़ में आया? आ गया हो तो अच्छी बात, और नहीं आया हो तो और अच्छी बात। क्योंकि अब तुम मुझे आसानी से जादूगर मान सकते हो।

लेकिन यह जादूगर तुम्हें जादू सिखा भी देगा। चलो इस सवाल का एक उदाहरण लेते हैं। मान लो तुमने संख्या ली 412, ठीक?

चलो अब इनको जोड़ लें (4+1+2) = 7.

अब 412 में से 7 घटा दें। तो बाकी बचा 405, है न। तुम इनमें से यानी 4, 0, 5 में से कोई भी दो अंक बताओगे, तो मैं तुम्हें तीसरे अंक के बारे में बता सकता हूँ।

अब इसके पीछे छिपे गणित को देखें। मान लो हमारी संख्या है - X Y Z

यानी सैकड़ा के स्थान पर X, दहाई के स्थान पर Y और इकाई के स्थान पर Z। यानी X Y Z का मान है –

$100X+10Y+1Z$

अब यदि इस संख्या $100X+10Y+1Z$ में से उसके तीनों अंकों के योग (यानी $X+Y+Z$) को घटा दें तो,

$$\begin{array}{l} 100X+10Y+1Z \\ -(\;X+\;Y+\;Z) \\ \hline =99X+9Y \end{array}$$

अब इन दोनों संख्याओं को ध्यान से देखो। वह कौन सी संख्या है जिससे ये पूरी तरह विभाजित हो जाए या उसका भाग चला जाए? इस संख्या के

दोनों ही हिस्सों, यानी 99X और 9Y, 9 से विभाजित हो जाती हैं। या यूँ कहें कि इनको नौ से पूरा-पूरा भाग देना संभव है। 99, 9 से ग्यारह बार और 9 एक बार।

इससे हमें यह पता चला है कि इस सवाल में घटाने के बाद बचने वाली संख्या 9 से पूरी तरह विभाजित हो जाती है।

तुम शायद पूछ बैठो कि ऐसा क्यों होता है। अगर जानना चाहो तो नीचे के बॉक्स में पढ़ो।

यहाँ हम अपने उदाहरण को लेकर सवाल को जारी रखते हैं। हमने संख्या 412 ली थी। घटाने के बाद हमारी संख्या 405 आई थी।

तो अब हम इसका कोई अंक गुप्त रखते हैं। मान लो 5 गुप्त रखा। अब हमारी संख्या 40 बची।

40 में 9 से भाग दो। भाग 4 बार गया न। और बाकी कितने बचे? 4 बचे हैं न! अब 4 के आगे क्या उतारें कि वह संख्या 9 से कट जाए?

करके देखो....कि कौन सा अंक लगाने से यह संख्या 9 से कट जाएगी।

यही होगा हमारा वह अंक जो हम बताएँगे या जो तुम्हारे दोस्त ने गुप्त रखा होगा।

अभी हमने संख्या 405 का अंक 5 गुप्त रखा था। अब दूसरा कोई अंक गुप्त रखकर देखते हैं।

मान लो हमने अंक 4 गुप्त रखा। अब सोचो 05 के बाद कौन सा अंक रखें कि इस संख्या को 9 से पूरी तरह भाग दिया जा सके। रखकर देखो!... जिस अंक को रखने पर संख्या पूरी तरह 9 से विभाजित हो जाए, वही गायब अंक होगा।

है कि नहीं आसान भी और मज़ेदार भी? तो अब तो तुम भी बन गए जादूगर!

कैसे होता है जादू?

दरअसल यह हमारी अंक प्रणाली की ही एक विशेषता है कि किसी भी संख्या में से उसके अंकों के योग को घटाने पर वह संख्या 9 से पूरी तरह कट जाती है। हमारी अंक प्रणाली 0 से 9 तक के चक्रों के रूप में आगे बढ़ती है।

चाहो तो इस बात को समझने के लिए हम कुछ और संख्याएँ लेकर देखते हैं। पहले हम 9 से शुरू करें तो –

9 के बाद 10 आता है। दस से नौ की दूरी 1 है और दस के अंकों का योग (1+0 = 1) भी 1 है।

इसी तरह तुम 11, 12..... करके देखो।

13 में 1 + 3 = 4 और 13–4 = 9

14 में 1 + 4 = 5 और 14–5 = 9

इसी तरह तुम 15 से आगे की संख्याओं को करके देखो।

19 में 1 + 9 = 10 और 19–10=9

इसके आगे

20 में 2 + 0 = 2 और 20–2 = 18 (9×2)

यहाँ 18 की दूरी है। 18, 9 का दुगुना है। इसके आगे भी इसी तरह –

21 में 2 + 1 = 3 और 21 – 3 = 18 (9×2)

29–11=18 (9×2)

30–3 = 27 (9×3)

39–12 = 27 (9×3)

100–1 = 99 (9×11)

200–2 = 198 (22×9)

हमने यहाँ बीच की संख्याएँ छोड़ दी हैं। तुम चाहो तो उन पर इस गणित को आज़माकर देख सकते हो।

यहाँ हमने यह देखा कि किसी भी संख्या के अंकों का जोड़ जितना भी आता है, वह संख्या 9 या 9 के किसी भी गुणज (जैसे 18, 27, 36, 45, ...) से भी उतने ही अंक दूर होता है। हमने यह बात दो और तीन अंकों वाली संख्याओं पर आज़माई। अब तुम चार या पाँच अंकों की सख्याएँ लेकर भी यह सवाल करके देखो।

कितनी ठंढक!

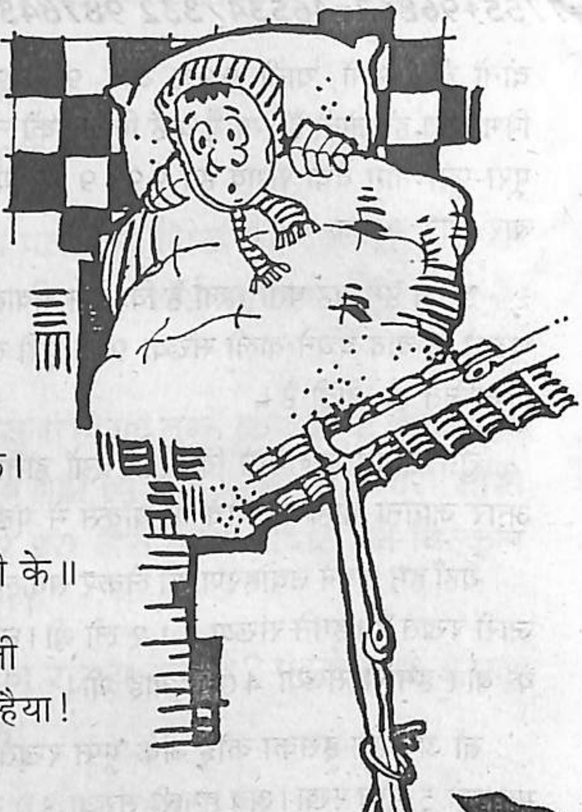

कितनी ठंढक
उफ री मइया!

नीचे गद्दा ऊपर हैं
दो-दो लिहाफ नानी के।
जला गई फिर भी वह
सब टुकड़े छप्पर-छानी के॥

बैठी जपती
कृष्ण-कन्हैया!

सरयू काका दिन में सोचें
झाँक-झाँक अंबर को -
सूरज जी छुट्टी लेकर
भागे हैं शायद घर को॥

खूंटे पर
रंभाती गइया!

कई दिनों के गीले कपड़े
पड़े हुए हैं घर में।
ओस कुहासा कुहरा है
भैया अपने तेवर में॥

लगे काटती
सबको छैंया!

● राजनारायण चौधरी

● चित्र : रंजित बालमुचु

झूमर बनाओ

खेल खेल में इस बार तुम्हारे लिए एक बहुत ही आसान लेकिन सुन्दर चीज़ दी जा रही है। इसे बनाने के लिए तुम्हें बिलकुल वही सामग्री न मिले तो तुम अपना दिमाग लगाकर कुछ ओर चीज़ें जुगाड़ो। और इसे बनाने की कोशिश करो।

सामग्री : एक बड़ा - सा टीन के डिब्बे का ढक्कन, बहुत सारे छोटे- बड़े ढक्कन, कागज़ में लगाने के क्लिप या तार, रंग, मज़बूत धागा, कैंची, कीलं, हथौड़ी।

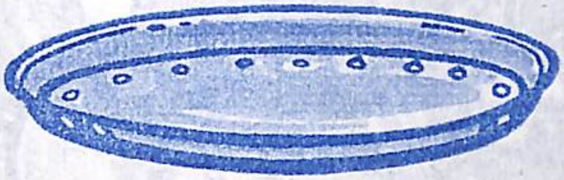

सबसे पहले बड़े ढक्कन में छेद कर लो। छेद पूरी गोलाई में थोड़ी-थोड़ी दूर पर करना।

कागज़ में लगाने के क्लिप इस तरह के होते हैं। इससे नीचे दिए गए आकार के हुक बनाना हैं।

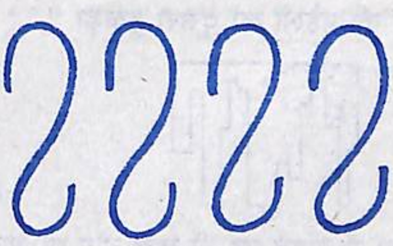

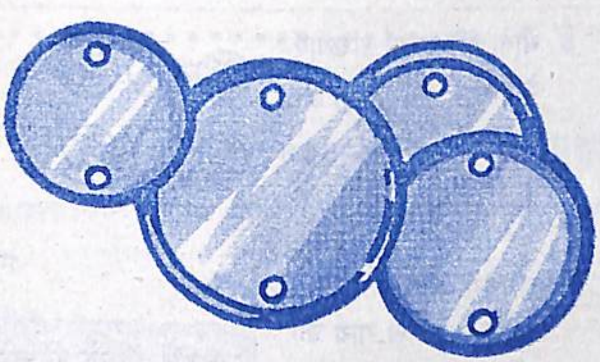

अब छोटे वाले सभी ढक्कनों में दो-दो छेद करो। ये छेद एकदम आमने-सामने होना चाहिए। छेद करने के लिए कील और हथौड़ी की मदद लेना है, यह तो तुम समझ ही गए होगे।सभी ढक्कनों को रंग लो।

अगर तुम्हारे पास क्लिप नहीं हों तो तुम तार से इस आकार के हुक बना लो। इसके लिए बहुत सारे हुकों की ज़रूरत होगी। अगर बड़े ढक्कन में 20 छेद हों तो लगभग 40 या 50 हुक लगेंगे।

इतना सब करने के बाद सबसे बड़े ढक्कन में किए गए छेदों में अलग-अलग लम्बाई के धागे पिरो लो। धागों को ऊपर से गठान बाँधकर अटका दो। धागे के दूसरे सिरे को किसी एक छोटे ढक्कन के छेद में पिरोकर गठान लगा दो।

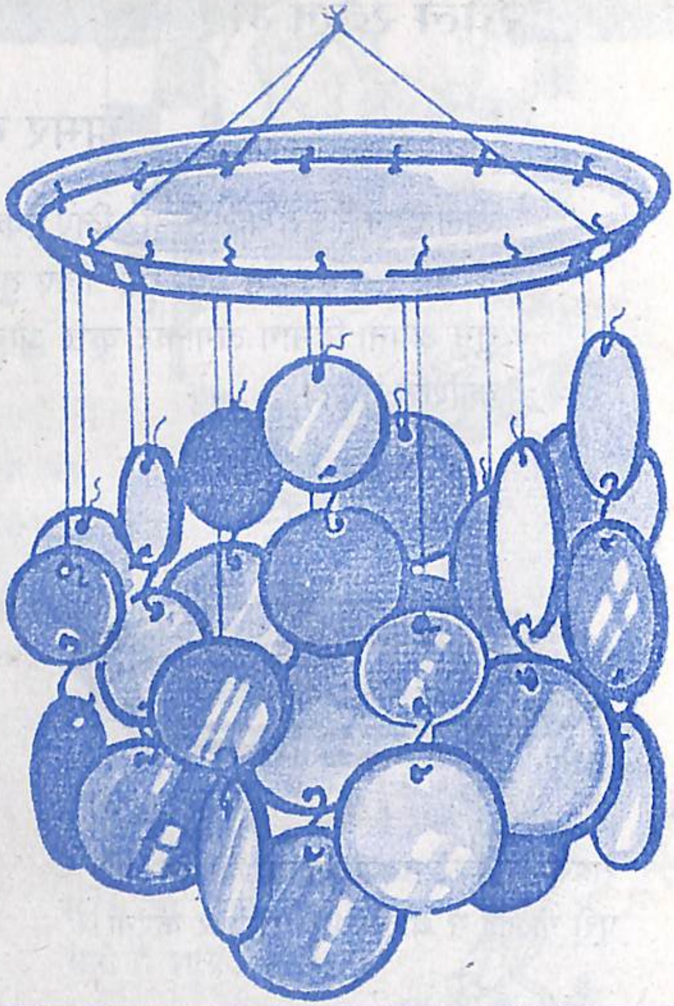

इसी तरह हर एक धागे में एक-एक ढक्कन बाँध दो।

जब सारे धागों में ढक्कन बँध जाएँ तब उनके दूसरे छेदों में हुक फँसाकर उनमें और ढक्कन लटकाते जाओ।

बड़े ढक्कन में जिस तरफ धागों की गठानें हैं उस तरफ तीन या चार धागे ऊपर की ओर लेकर उन्हें आपस में एक गठान से जोड़ लो। इस की सहायता से तुम इसे कहीं लटका सकते हो। और फिर सुनो झूमर की सुरीली आवाज़।

तुम्हारे पास जितने अलग-अलग आकार के छोटे ढक्कन होंगे, तुम्हारा झूमर उतना ही अच्छा बनेगा।

माथापच्ची के हल अक्टूबर माह के

1. सुनीता की पहेली का दूसरा टुकड़ा।

2. दो भागों में बाँटने पर भी कुल योग तो अपरिवर्तित ही रहेगा।
3. ये हैं वो तीन आकृति जो बिना पैंसिल उठाए बन सकती हैं। चौथी जो नहीं बन सकती वो तो तुम अब ढूँढ ही लोगे।

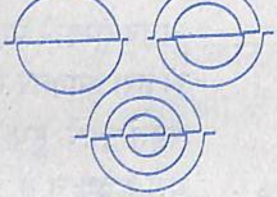

4. मीना की बनाई संख्याएँ ये हैं – 706, 558

5. वह खिड़की से अन्दर की ओर कूद गया।
6. चीन की दीवार।
7. 24 बार।
8. लगभग 45.6 मीटर लम्बी रस्सी से गाय को बाँधा जाए।
9. इसका एक सरल जबाव है 360° प्रतिदिन और दूसरा 28 किलोमीटर प्रति मिनट की गति से पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है।

पहेलियों के उत्तर

1 – मंगलवार, बुधवार
2 – चाय की पत्ती
3 – पन्ना छह
4 – अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर
5 – पूरब
6 – तीन

पाठक लिखते हैं

अगस्त 99' अंक प्राप्त हुआ। अंक में शाही फरमान कविता पढ़कर दंग रह गया। एक आठवीं कक्षा के छात्र में इतनी सूझबूझ है, इतनी जानकारी है। जानकर प्रसन्नता हुई कि हमारे छात्र केवल कल्पनाओं की उड़ान नहीं भरते, सत्य के धरातल पर भी हैं। मेरी ओर से छात्र चि. प्योली और आपको भी बधाई!

• रामवचनसिंह 'आनन्द', चक्रधरपुर, बिहार

मैं 'चकमक' का एक पुराना पाठक हूँ। मुझे चकमक अप्रैल 1990 से मिलनी शुरू हुई थी, जब मैंने आकाशवाणी द्वारा प्रायोजित विज्ञान-विधि धारावाहिक में पुरस्कार प्राप्त किया था। विश्वास ही नहीं होता कि चकमक पढ़ते हुए इतनी उम्र गुजर गई। अभी मैं स्टेट बैंक ऑफ इंदौर में लिपिक के पद पर कार्यरत हूँ।

मेरा एक सुझाव था कि अब तक चकमक में आपने जो कहानियाँ या धारावाहिक प्रकाशित किए हैं, उन्हें एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करें, ताकि इन सारी कहानियों का आनंद पाठक एक ही जगह प्राप्त कर सकें। साथ ही चकमक की पृष्ठ संख्या व सामग्री में वृद्धि करें तो सोने-पे-सुहागा हो जाए। चकमक निरन्तर लगभग पंद्रह वर्षों से प्रकाशित हो रही है, इसके लिए चकमक की पूरी टीम बधाई की पात्र है।

• मुकेश कुमार, गरोठ, मंदसौर, म. प्र.

मैंने आपकी पत्रिका 'चकमक' का सितम्बर का अंक पढ़ा। इससे पहले भी मैंने बच्चों के लिए लिखी गई बहुत पत्रिकाओं को पढ़ा। लेकिन आपकी पत्रिका चकमक ने मुझको जितना प्रभावित किया उतना शायद किसी और पत्रिका ने नहीं।

आप कृपया अपना सदस्यता रिकॉर्ड देखकर यह बताएँ कि आपके किस सदस्य ने मुझे इतनी अच्छी पत्रिका से परिचित कराया। मुझे उस सदस्य का नाम व पता लिखकर भेज दें, जिससे मैं उसको धन्यवाद दे सकूँ। क्योंकि उसने मुझे चकमक से परिचित कराया।

• रवीन्द्र कुमार शुक्ला, फैज़ाबाद, उ. प्र.

✿✿✿

सितम्बर अंक का आवरण, जो काफी खूबसूरत है, देखकर ही लगा कि पत्र लिखूँ।

चकमक की कीमत को ध्यान में रख कुछ सामग्री बढ़ाना आवश्यक है। 'सवालीराम' जारी रहना चाहिए। इसी तरह कुछ रोचक जानकारियाँ वाला कोई स्तम्भ शुरू किया जा सकता है। वर्ग पहेली के अलावा भी शब्द-ज्ञान वाला कोई और कॉलम शुरू कर सकते हैं। हालाँकि ये बातें लगभग सभी पत्रिकाओं में रहती हैं लेकिन अपने संपादन-कौशल से आप इसे विशिष्ट बना सकते हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि पहले चकमक के बेहद अच्छे अंक निकल चुके हैं। काफी पुराने अंकों की सामग्री दोहराने में भी मुझे कुछ गलत नहीं लगता, क्योंकि पाठकों की पीढ़ी अब बदल गई है। संभव है कि यह सब करने में आपको काफी मुश्किलें आ रही हैं। लेकिन पत्रिका के ज़्यादा प्रसार और रोचकता के लिए कुछ परेशानियाँ भी उठानी होंगी।

• गिरिजा कुलश्रेष्ठ, ग्वालियर, म. प्र.

यहाँ से काट लें

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर माह .... से चकमक भेजना शुरू करें –

नाम .... मोहल्ला ....

डाकघर .... ज़िला .... पिन

सदस्यता शुल्क रु.	छह माह	एक साल	दो साल	तीन साल	आजीवन
	50.00	100.00	180.00	250.00	1000.00

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

• जो लागू हो उस पर सही (✓) का निशान लगाएँ।

ड्रॉफ्ट/चेक एकलव्य के नाम में बनवाकर इस पते पर भेजें –

एकलव्य ई–1/25 अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

फोन : 563380

नाम एवं हस्ताक्षर

एकलव्य के नए प्रकाशन

ओरीगेमी की दो किताबें

कागज़ को मोड़कर सुन्दर आकृतियों को सजीव करने वाली कला है ओरीगेमी। ओरीगेमी पर हिन्दी में अपनी तरह की दो किताबें।

एक आधार अनेक आकार
पृष्ठ : 40+4; मूल्य : 20 रुपए

तितलियाँ और अन्य खिलौने
पृष्ठ : 48+4; मूल्य : 25 रुपए

किताब मँगाने के लिए किताब की कीमत और साथ में रजिस्टर्ड डाक का खर्च 15 रुपए जोड़कर मनीऑर्डर से भेजें।

दोनों किताबें एक साथ मँगाने पर आपको देने होंगे सिर्फ 55 रुपए। और हम आपको ये किताबें रजिस्टर्ड डाक से भेजेंगे।

मनीऑर्डर भेजने के लिए पता
एकलव्य
ई - 1/25 अरेरा कॉलोनी,
भोपाल, 462 016 म. प्र.

यहाँ से काट लें

चकमक के सदस्य बनें आप : उपहार पाएँ दोस्त

आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं। अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन

किरण मिमरोट, उज्जैन, म.प्र.

गोपालदास बैरागी, दसवीं, बालागुड़ा, मन्दसौर, म.प्र.

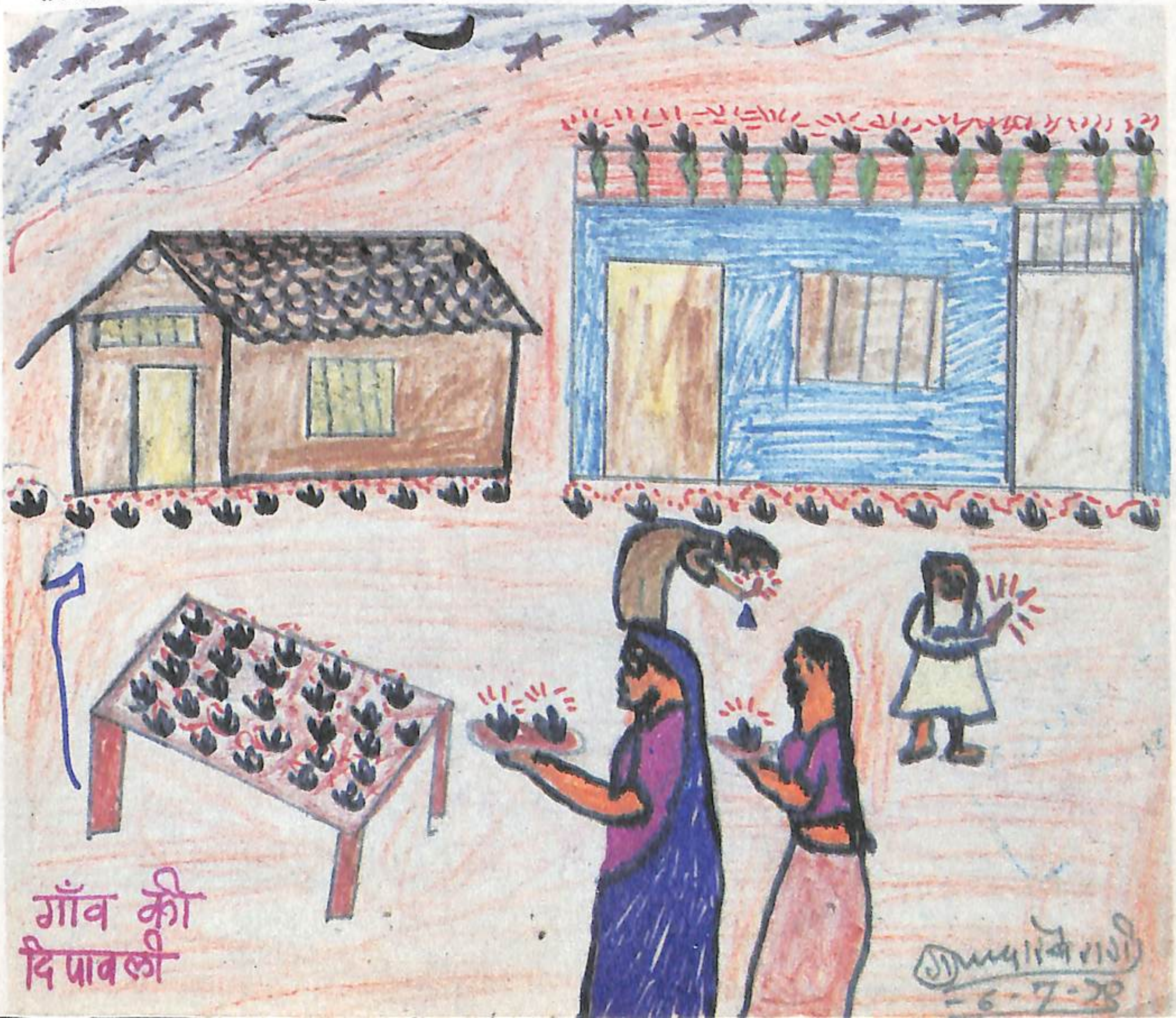

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक MP-2/P-431/99

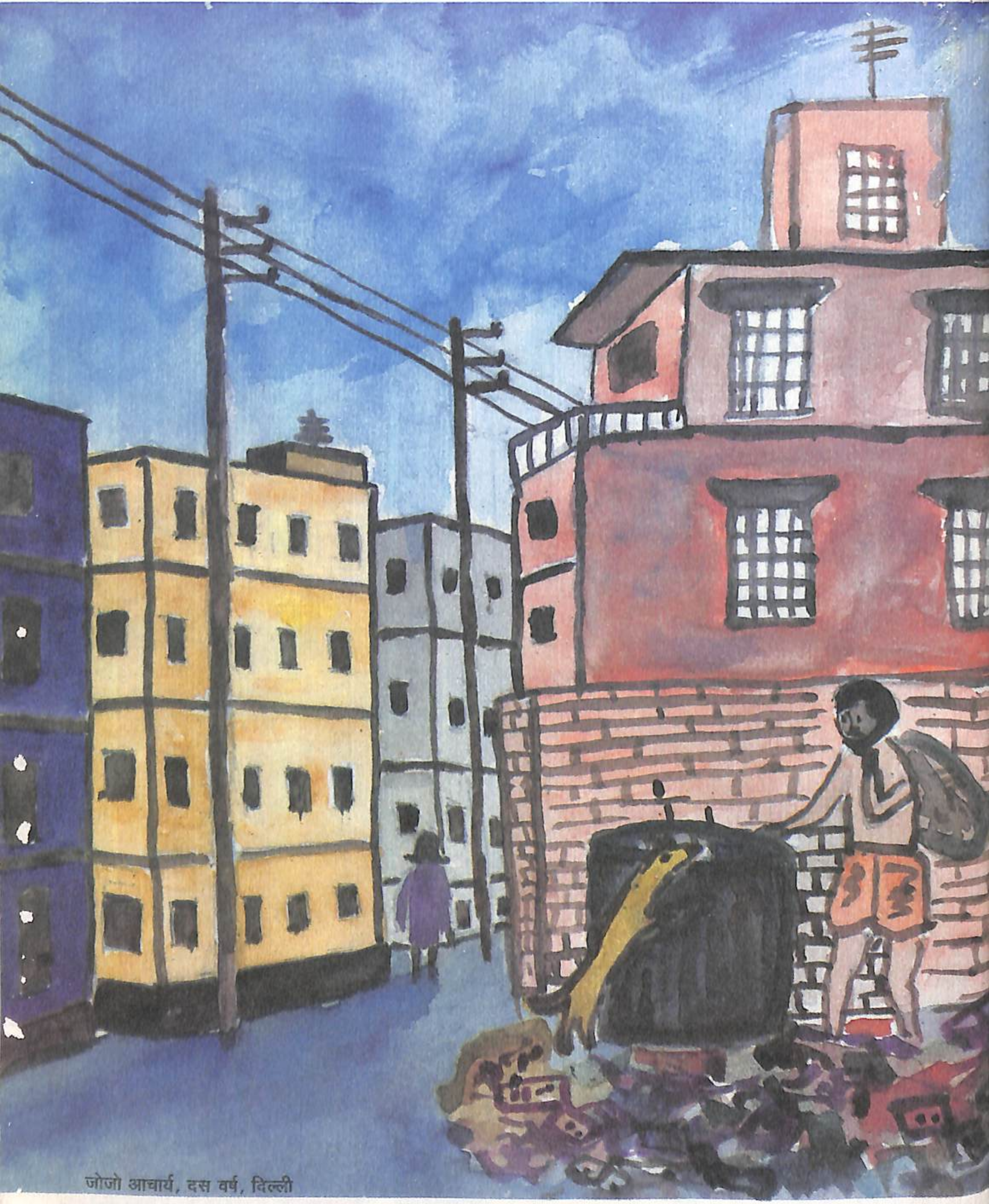

जोजो आचार्य, दस वर्ष, दिल्ली

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना